नमाज़ के अज़कार

नमाज़ के अज़कार

नाम किताब	----------	नमाज़ के अज़कार
तालीफ़	----------	ख़दिजा आलम
ज़ेरे निगरानी	----------	डॉक्टर फ़रहत हाश्मी
नाशिर	----------	अल्हुदा पब्लीकेशनज़
एडीशन 1	----------	Nov. 2018 | इशाअत 1
एडीशन 2	----------	May 2023 | इशाअत 5
तादाद	----------	5000
ISBN	----------	978-969-8665-75-3

मिलने के पते

AlHuda Welfare Trust India, Post Box Number 444
Basavanagudi Bangalore 560004 ,India
Landline: +918040924255.
official email: alhuda.india@gmail.com
www.alhudapk.com www.farhathashmi.com

india

PO Box 2256 Keller TX 76244
+1-817-285-9450 +1-480-234-8918
www.alhudaonlinebooks.com

america

5671 McAdam Rd ON L4Z IN9 Mississauga Canada
+1-905-624-2030 +1-647-869-6679
www.alhudainstitute.ca

canada

14 Wangey Road, Chadwell Heath Romford,
Essex RM6 4AJ London U.K.
+44-20-8599-5277 +44-79-1312-1096
alhudauk.info@gmail.com
alhudaproducts.uk@gmail.com

U.K

फ़ेहरिस्त

नमबर शुमार	उनवान	सफ़ाह नमबर
1	मुक़दमा	1
2	नमाज़	2
3	अज़ान व इक़ामत	2
4	अज़ान आग़ाज़ व कलिमात	3
5	फ़ज्र की अज़ान	5
6	अज़ान का जवाब और बाद की दुआएं	5
7	वुज़ु के बाद की दुआएं	8
8	मस्जिद में दाख़िल होने की दुआएं	10
9	मस्जिद से निकलने की दुआएं	11
10	तक्बीरे तहरीमा	12
11	दुआए इस्तिफ़ताह	12
12	रुकू की दुआएं	17
13	क़ौमा की दुआएं	22
14	सजदे की दुआएं	27
15	जलसे की दुआ	33
16	तशह्हुद	34
17	दरूद शरीफ़	35
18	तशह्हुद वा दरूद के बाद की दुआएं	37

19	सलाम फैरने के बाद की दुआएं	43
20	वितर की दुआएं	56
21	नमाज़ जनाज़ा की दुआएं	59
22	नमाज तहज्जुद के लिए दुआए इस्तिफ़्ताह	62
23	नमाज़े इसतेख़ारा की दुआ	66
24	नमाज़े इसतसक़ा की दुआएं	68
25	सज्दा तिलावत कि दुआएं	70
26	المصادر والمراجع	72

بسم اللہ الرحمن الرحیم

मुक़दमा

नमाज़, इस्लाम की बुनियाद और एक फ़र्ज़ इबादत है जो दिन में पाँच मरतबा अदा की जाती है। क़यामत के दिन सबसे पहला सवाल नमाज़ के बारे में होगा,अगर सही हुई तो इंसान कामयाब हो गया और निजात पा गया, और अल्लाह ना करे अगर सही ना हुई तो नाकाम हो गया और ख़सारा में पड़ गया। नमाज़ में जब तक बंदा अल्लाह तआला की तरफ़ मुतावज्जह रहता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ मुतावज्जह रहता है लेकिन जब बंदा रूगरदानी करता है तो अल्लाह तआला भी उससे तवज्जा हटा लेता है।

नमाज़ जैसी अहम इबादत का हक़ अदा करने के लिए यह ज़रूरी है के नमाज़ अदा करना सिखाया जाए और उसके अज़कार शऊरी तौर पर पढ़े जाएं। इस किताबचे में नमाज़ से मुताल्लिक़ तमाम दुआएं और अज़कार आसान तर्जुमे के साथ जमा कर दिए गए हैं ताकि उन्हें याद करके नामाज़ के ख़ुशू व ख़ुज़ू में इज़ाफ़ा किया जा सके। अज्र में मज़ीद इज़ाफ़े के लिए इस किताब को ख़ानदान के दूसेर अफ़राद और दोस्त अहबाब के साथ मिलकर भी पढ़ सकते हैं।

अल्लाह तआला से दुआ है के वह हमारे ईमान में इज़ाफ़े और अपने क़ुर्ब का ज़रिया बना दे। --आमीन

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ،رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِO [ابراھیم:40]

“ ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना दे, ऐ हमारे रब! तू मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा” (आमीन)

नमाज़

नमाज़ के लिए अरबी में صلوٰۃ का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है जिसका लग़वी माना दुआ है। इस्तलाह में नमाज़ क़ौली और फ़ैली इबादत है जो (اللہ اکبر) तकबीर के साथ शुरू की जाती है और तस्लीम (السلام علیکم ورحمۃ اللہ) तसलीम के साथ ख़त्म की जाती है।

नमाज़ में की जाने वाली तिलावत, अज़कार, दुआएं और तस्बिहात वग़ैरह क़ौली इबादत जबकि नमाज़ के अरकान व हरकात फ़ैली इबादत है। क़ुरआन मजीद में नमाज़ के लिए बाज़ दीगर अलफाज़ भी इस्तेमाल हुए हैं मसलन: ईमान, क़ुरआन, क़ुनूत, रुकू और सजदा।

आज़ान व इक़ामत

आज़ान,शआइर इस्लाम में से है। आज़ान का लग़वी माना " पूकारना, इत्तेला देना, ख़बरदार करना" है।

शरियत की इस्तलाह में आज़ान से मुराद "वह ख़ास कलिमात हैं जिनके ज़रिए लोगों को नमाज़ के वक़्त की इत्तेला दी जाती है"।

नमाज़ के लिए आज़ान देना फ़र्ज़ है। सूरह अलजुमा की दर्ज ज़ेल आयत से नमाज़ के लिए आज़ान देने का हुक्म वाज़ेह होता है। अल्लाह तआला का इर्शाद है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ

وَذَرُوا الْبَيْعَ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَo

"ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए आज़ान दी जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ लपको और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो"।

सय्यदना मालिक बिन हवेरिस ؓ से रिवायत है... आप ﷺ ने फ़रमाया... فَإِذَا حُضِرَتِ الصَّلَاةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ اَحَدُكُمْ... जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुम में से एक शख़्स आज़ान दे..."।

---

① مصباح اللغات ② سلسلة تيسير الفقه الاسلامی

③ الجمعه:9، البقرة:143، الاسراء:78، الزمر:9، البقرة:43، الحجر:98 ④ الجمعة:9 ⑤ صحيح البخاری:628

आज़ान आग़ाज़ व कलिमात

मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन ज़ैद बिन अब्दे रिबाؓ कहते हैं के मुझे मेरे वालिद सय्यदना अब्दुल्ला बिन ज़ैदؓ ने बताया के जब रसूल अल्लाह ﷺ ने नाक़ूस बनाने का हुक्म दिया ताकि उसके ज़रिए लोगों को नमाज़ के लिए जमा किया जाए तो मैंने ख़्वाब में देखा के एक आदमी हाथ में नाक़ूस लिए हुए है। मैंने (उससे) कहा: ऐ अल्लाह के बंदे क्या तू नाक़ूस बेचेगा? उसने कहा तुम इसका क्या करोगे? मैंने कहा हम इससे लोगों को नमाज़ के लिए बुलाएंगे। वह कहने लगा मैं तुम्हें वह चीज़ ना बताऊँ जो इससे बेहतर है। मैंने कहा क्यों नहीं। तो उसने कहा तुम कहा करो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

" अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद हक़ीक़ी नहीं। मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद हक़ीक़ी नहीं। मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। मैं गवाही देता

हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। आओ नमाज़ की तरफ़। आओ नमाज़ की तरफ़। आओ कामयाबी की तरफ़। आओ कामयाबी की तरफ़। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद हक़ीक़ी नहीं "।

सय्यदना अब्दुल्ला बिन ज़ैदؓ कहते हैं के फिर वह मुझसे कुछ पीछे हट गया और उसने कहा के जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो यूँ कहो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ،حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ،قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

" अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद हक़ीक़ी नहीं। मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। आओ नमाज़ की तरफ़ आओ कामयाबी की तरफ़। तहक़ीक़ नमाज़ खड़ी हो गई है। तहक़ीक़ नमाज़ खड़ी हो गई है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद हक़ीक़ी नहीं।"

जब सुबह हुई तो मैं रसूल अल्लाह ﷺकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और जो कुछ (ख़्वाब में) देखा था आपﷺ को बताया। तो आपﷺ ने फ़रमाया: " इन शा अल्लाह यह सच्चा ख़्वाब है। तुम बिलाल के साथ खड़े हो जाओ और उसे वह कलिमात बताते जाओ जो तुमने देखे हैं। पस वह उन (कलिमात) के साथ आज़ान कहे क्योंकि वह तुमसे ज़्यादा बुलंद आवाज़ है " तो मैं बिलाल

के साथ खड़ा हो गया और उन्हें वह अल्फ़ाज़ बताता गया और वह आज़ान कहते गये। कहते हैं के उमर बिन ख़त्ताबؓ अपने घर में थे, उन्होंने इसे सुना तो(जल्दी से) चादर घसीटते हुए आए, कहने लगे: क़सम उस ज़ात की जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है ऐ अल्लाह के रसूलﷺ ! मैंने भी यही ख़्वाब देखा है जैसा के उसे दिखाया गया है। तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
"पस तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है"।

फ़ज्र की आज़ान

फ़ज्र की आज़ान के लिए नबी करीम ﷺ ने कुछ ज़ायद कलिमात सिखाए। सय्यदना अबू महज़ूराؓ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हुए कहते हैं, मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे आज़ान का तरीक़ा सिखा दीजिए, आप ﷺ ने मेरे सिर के अगले हिस्से पर (हाथ) फेरा और फ़रमाया: " तुम कहा करो اَللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُ اَكْبَرُ अगर सुबह की नमाज़ हो तो कहो:

اَلصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ اَلصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

नमाज़ नींद से बेहतर है नमाज़ नींद से बेहतर है "

आज़ान का जवाब और बाद की दुआएं

सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी करते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
"जब तुम आज़ान सुनो तो उसी तरह कहो जिस तरह मोअज़्ज़न कहता है।
सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब ؓ बयान करते हैं के नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:".जब मोअज़्ज़न حَـيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ कहे तो तुम لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ कहो..."

---

①سنن أبی داؤد:499 ②سنن أبی داؤد:500 ③صحيح البخاری:611 ④صحيح مسلم:850

और اَلصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ के जवाब में यही अल्फ़ाज़ दोहराए जाएंगे।
सय्यदना अब्दुल्ला बिन उमर ؓ से रिवायत है के उन्होंने नबी करीम ﷺ को फ़रमाते हुए सुना: "जब तुम मुअज़्ज़न (की आज़ान) सुनो तो तुम वही कहो जो मुअज़्ज़न कहे फिर मुझ पर दरूद भेजो क्योंकि जो कोई मुझ पर एक मर्तबा दरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उसपर अपनी दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। फिर अल्लाह से मेरे लिए वसीला मांगो क्योंकि वह जन्नत में एक मुक़ाम है जो अल्लाह के बंदों में से एक बंदे के लिए होगा और मुझे उम्मीद है के वह बंदा मैं ही हूंगा तो जो कोई मेरे लिए वसीला तलब करेगा उसपर मेरी शिफ़ाअत वाजिब हो जाएगी"।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

"ऐ अल्लाह! मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जिस तरह तूने इब्राहीम عليه السلام और आले इब्राहीम عليه السلام पर रहमत नाज़िल फरमाई। बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला और बहुत बुज़ुर्गी वाला है ऐ अल्लाह! मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर बर्कत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम عليه السلام और आले इब्राहीम عليه السلام पर बर्कत नाज़िल फरमाई,बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला और बहुत बुज़र्गी वाला है"

सय्यदना ज़ाबिर बिन अब्दुल्ला ؓ से रिवायत है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिसने आज़ान सुन कर यह कहा:

---

① صحيح مسلم:849 ② صحيح البخارى:3370

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ، اٰتِ مُحَمَّدَا
الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا الَّذِىْ وَعَدْتَّهُ.

"ऐ अल्लाह! इस दावते कामिल और क़ायम होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद ﷺ को वसीला और फ़ज़ीलत अता फ़रमा और उन्हें उस मुक़ामे महमूद पर फ़ाएज़ फ़रमा जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है तो क़यामत के दिन उसको मेरी शिफ़ाअत नसीब होगी ।"

सय्यदना साद बिन अबी वक़ास ؓ रसूल अल्लाह ﷺ से रिवायत बयान करते हैं के आप ﷺ ने फ़रमाया: " जिसने मुअज़्ज़न (की आज़ान) को सुन कर यह कहा:

اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا
وَبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا...

" मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं, मैं अल्लाह के रब होने, मुहम्मद ﷺ के रसूल होने और इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हूँ "तो उसके गुनाह बख़्श दिए जाएंगे..."

सय्यदना अनस बिन मालिक ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: आज़ान और इक़ामत के दरमियान मांगी गई दुआ रद्द नहीं की जाती"।

---

①صحيح البخارى:614 ②صحيح مسلم:851 ③سنن الترمذى:212

वुज़ु के बाद की दुआएं

1. सैय्यदना उक़्बा बिन आमिरؓ से रिवायत है... आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से जो ख़ूब अच्छी तरह वुज़ु करे फिर कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ.

मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं है और यह के मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं "।

एक दूसरी रिवायत में यह है के वह (यूं) कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ.

"मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं है। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं "।

तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं वह जिससे चाहे दाख़िल हो जाए"।

2.सय्यदना उमर बिन ख़त्ताबؓ से रिवायत है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: " जिसने ख़ूब अच्छी तरह वुज़ु किया फिर कहा:

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

---

① صحيح مسلم:553،554

“ मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों में से कर दे और मुझे पाकी हासिल करने वालों में से बना दे”

तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाते हैं वह जिससे चाहे दाख़िल हो जाए”

3. सय्यदना अबू सईद ؓ से रिवायत है, नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:
“ जिसने वुज़ु किया फिर कहा

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ.

“ऐ अल्लाह! तू पाक है और तेरी ही तारीफ़ है, मैं गवाही देता हूँ के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं तुझसे बख़्शिश मांगता हूँ और तेरी तरफ़ तौबा करता हूँ”

तो यह एक रेजिस्टर में लिख दिया जाता है फिर एक मुहर लगाने वाला उस पर मुहर लगा देता है जो क़यामत के दिन तक नहीं तोड़ी जा सकती

---

① سنن الترمذی:55 ② السنن الکبریٰ للنّسائی، ح:9829.9

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआएं

मस्जिद में पहले दायां पाओं रखें ।

1. सय्यदना अबू सईद ؓ से रिवायत है, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:
" जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो यह कहे:

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ.

"ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत का दरवाज़े खोल दे"

2. सय्यदना अब्दुल्ला बिन अमर बिन आस ؓ बयान करते हैं के आप ﷺ जब मस्जिद में दाख़िल होते तो कहा करते थे:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ،وَبِوَجْهِهِ الْكَرِیْمِ،وَسُلْطَانِهِ الْقَدِیْمِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ.

" मैं शैतान मरदूद (के शर) से अल्लाह की पनाह लेता हूँ जो इन्तहाई अज़मत वाला है, मैं उसके इन्तहाई मोहतरम चेहरे की पनाह लेता हूँ और उसके सुलताने क़दीम की पनाह लेता हूँ "।

...इंसान जब यह कह लेता है तो शैतान कहता है के आज सारे दिन के लिए यह मुझसे महफ़ूज़ हो गया "।

3. सय्यदा फ़तिमा ؓ बिन्त रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाती हैं, जब रसूल अल्लाह ﷺ मस्जिद में दाख़िल हुआ करते तो फ़रमाते:

بِسْمِ اللّٰهِ،وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ.

---

① المستدرك للحاكم، ج:1,822، السلسلة الصحيحة، ج:2478 ② صحيح مسلم:1652

③ سنن أبي داؤد:466

“अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह के रसूल पर सलाम, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बख़्शदे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोलदे”

मस्जिद से निकलने की दुआएं

1. सय्यदना अबू उसय्यद ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुममें से कोई शख़्स जब मस्जिद से बाहर निकले तो अपना बायाँ पाऊं मस्जिद से बाहर रखे और यह दूआ मांगे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡاَلُکَ مِنۡ فَضۡلِکَ.

“ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझसे तेरे फ़ज़ल का सवाल करता हूं”

2. सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “तुममें से कोई शख़्स जब मस्जिद से बाहर निकले तो नबी करीम ﷺ पर सलाम भेजे और कहे:

اَللّٰهُمَّ اعۡصِمۡنِیۡ مِنَ الشَّیۡطَانِ الرَّجِیۡمِ.

“ऐ अल्लाह! मुझे शैतान मर्दूद से महफ़ूज़ रख”

3. सय्यदा फ़ातिमा ؓ बिन्ते रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाती हैं ,..... जब रसूल अल्लाह ﷺ मस्जिद से निकलते तो कहते :

بِسۡمِ اللّٰهِ،وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوۡلِ اللّٰهِ،اَللّٰهُمَّ اغۡفِرۡلِیۡ ذُنُوۡبِیۡ وَافۡتَحۡ لِیۡ اَبۡوَابَ فَضۡلِکَ.

“अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह के रसूल पर सलाम, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बख़्शदे और मेरे लिए अपने फ़ज़ल के दरवाज़े खोलदे”

---

①سنن ابن ماجه:771 ②المستدرك للحاكم، ج:1,822،السلسلة الصحيحة، ح:2478

③صحيح مسلم:1652 ④سنن ابن ماجه:773 ⑤سنن ابن ماجه:771

तक्बीर तहरीमा

اللّٰہ اکبر

नमाज़ की अव्वल तक्बीर को तक्बीर तहरीमा इस लिए कहा जाता है क्यों कि नमाज़ की इब्तिदा होते ही नमाज़ी पर बहुत सी हलाल चीज़ें हराम हो जाती हैं, मस्लन इधर उधर देखना, बातें करना वग़ैरा ।

दुआए इस्तफ़ताह

सुरत अलफ़ातिहा से पहले

1. सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है वह कहती हैं जब नबी करीम ﷺ नमाज़ शुरू करते तो कहते :

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ.

" ऐ अल्लाह पाक है तू अपनी तारीफ़ के साथ, तेरा नाम बड़ा ही बाबर्कत है, तेरी शान बहुत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ।"

2. सय्यदना अबू हुरैरा ؓ ने बयान किया के रसूल अल्लाह ﷺ तक्बीर तहरीमा और क़िरआत के दर्मियान थोड़ी देर ख़ामोश रहते थे, मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आप ﷺ पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों आप ﷺ तक्बीर और क़िरआत के दर्मियान की ख़ामोशी में क्या पढ़ते हैं ? आप ﷺ ने फ़रमाया: " मैं पढ़ता हूं

---

① سنن الترمذی:243

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِى وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ، اَللّٰهُمَّ نَقِّنِى مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَاىَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ.

" ऐ अल्लाह! मेरे और मेरी ख़ताओं के दर्मियान दूरी डालदे जैसे तू ने मशरिक़ और मग़रिब के दर्मियान दूरी डालदी है, ऐ अल्लाह! मुझे ख़ताओं से पाक कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है, ऐ अल्लाह! मेरी ख़ताओं को पानी, बर्फ़ और ओलों से धोडाल "

3. सय्यदना इब्ने उमर ؓ कहते हैं कि हम रसूल अल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ अदा कर रहे थे, इस दौरान लोगों में से एक आदमी ने कहा:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا.

"अल्लाह सब से बड़ा, तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं बहुत ज़्यादा (तारीफ़) और सुबह शाम अल्लाह ही की पाकी (बयान करना) है"

तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "यह कलिमात कहने वाला कौन है?" लोगों में से एक आदमी ने कहा मैं या रसूल अल्लाह ﷺ ! आप ﷺ ने फ़रमाया : " मुझे इस पर ताज्जूब है के इसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए गए" इब्ने उमर ؓ कहते हैं के जब मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को यह कहते सुना तो कभी इन कलिमात को ना छोड़ा

---

① صحيح البخارى:744 ② صحيح مسلم:1358

4:सय्यदना अली बिन अबू तालिब ؓ रसूल अल्लाह ﷺ से बयान करते हैं के जब आप ﷺ नमाज़ के लिए खड़े होते तो फ़रमाते:

وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ،اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ،لَا شَرِيْكَ لَهُ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ،اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْمَلِكُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ،اَنْتَ رَبِّيْ وَاَنَا عَبْدُكَ،ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ جَمِيْعًا،اِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ،وَاهْدِنِيْ لِاَحْسَنِ الْاَخْلَاقِ لَا يَهْدِيْ لِاَحْسَنِهَا اِلَّا اَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّيْ سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّيْ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ،لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ فِيْ يَدَيْكَ وَالشَّرُّ لَيْسَ اِلَيْكَ، اَنَا بِكَ وَاِلَيْكَ،تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ،اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ...

“मैंने यकसू होकर अपना चहरा उस ज़ात की तरफ़ किया जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। बेशक मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी औ र मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है, जिसका कोई शरीक नहीं और उसी का मुझे हुकुम दिया गया है और मैं मुसलमानों मेंसे से हूं, ऐ अल्लाह तू

ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूं, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं अपने (तमाम) गुनाहों का एतराफ़ करता हूं पस मेरे लिए मेरे सब गुनाहों को बख़्शदे, क्योंकि तेरे सिवा कोई भी गुनाह नहीं बख़्श सकता और अच्छे अख़्लाक़ की तरफ़ मेरी रहनूमाई फ़रमा, तेरे सिवा अच्छे अख़्लाक़ की तरफ़ कोई भी रहनुमाई नहीं कर सकता और बुरे अख़्लाक़ को मुझसे दूर करदे, बुरे अख़्लाक़ को तेरे सिवा मुझसे कोई दूर नहीं कर सकता मैं हाज़िर हूं और फ़रमाबर्दार हूं और भलाई सारी कि सारी तेरे हाथ में है और किसी शर की निस्बत तेरी तरफ़ नहीं है, मैं तेरा ही(बन्दा)हूं और तेरी तरफ़ ही रुजू करता हूं, तू बहुत बाबर्कत है और बहुत बुलन्द है, मैं तुझसे मग़फ़िरत तलब करता हूं और तेरी जानिब तौबा करता हूं ....”

5. सय्यदना अनस ؓ से रिवायत है के एक आदमी आया और सफ़ में दाख़िल हो गया और उसका सांस फूल रहा था उसने कहा:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ.

“तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, बहुत ज़्यादा पाकीज़ा और बाबर्कत तारीफ़ ”

रसूल अल्लाह ﷺ अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया: “तुममें से (नमाज़ में) यह कलिमात कहने वाला कौन है”? लोग ख़ामोश रहे, आप ﷺ ने (दोबारा) फ़रमायाः “तुम में से यह कलिमात कहने वाला कौन है ? क्योंकि उसने कोई ग़लत बात नहीं कही”, तो एक आदमी ने अर्ज़ किया मैं आया तो मेरा सांस फूल रहा था तब मैंने यह कलिमात कहे, आप ﷺ ने फ़रमाया “मैंने बाराह फ़रिशतों को देखा के झपट रहे थे के कौन इन में से इन (कलिमात) को ऊपर लेकर जाएगा”

---

① صحيح مسلم:1812 ② صحيح مسلم:1357

तअव्वुज़

1. सय्यदना अबू सईद ख़ुद्री ؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ क़िरात से पहले यह कहा करते थे:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

"मैं शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह में आता हूं"

2. सय्यदना अब्दूल्लाह बिन मसूद ؓ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया :

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَعُوْذُبِکَ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهٖ وَنَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ.

"ऐ अल्लाह बेशक मैं शैतान मर्दूद से, उसकी उक्साहट, उसकी फूंक और उसके वस्वसों से तेरी पनाह में आता हूं"

---

① المصنف لعبد الرزاق، ج:2،2589 ② سنن ابن ماجه:808

रुकू की दुआएं

1. सय्यदना हुज़ैफ़ा ؓ से रिवायत है के मैं ने एक रात रसूल अल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी तो आप ﷺ ने सूरत अल बक़रा शुरू करदी और मैंने (दिल में) कहा कि आप ﷺ शायद सौ आयतों पर रुकू करेंगे, फिर आप ﷺ आगे बढ़ गए, फिर मैंने ख़्याल किया कि शायद आप ﷺ एक रकअत में इस (पूरी सूरत) को पढ़ेंगे, फिर आप ﷺ आगे बढ़ गए, फिर मैंने ख़्याल किया कि आप ﷺ इस (सूरत के पूरे होने) पर रुकू करेंगे, फिर आप ﷺ ने अल निसा शुरू करदी और उसको भी (मुकम्मल) पढ़ा और फिर आप ﷺ ने आले इमरान शुरू करदी और उसको भी (मूकम्मल) पढ़ा और आप ﷺ ठहर ठहर कर पढ़ते थे और जब आप ﷺ किसी तस्बीह वाली आयत से गुज़रते तो सुब्हान अल्लाह कहते और किसी सवाल की आयत से गुज़रते तो सवाल करते और जब किसी ताऊज़ की आयत से गुज़रते तो पनाह मांगते, फिर आप ﷺ ने रुकू किया तो कहने लगे:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ.

"पाक है मेरा रब अज़मत वाला" यहां तक कि आप ﷺ का रुकू भी क़याम के बराबर हो गया...

2. सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ अपने रुकू और सुजूद में फ़रमाते :

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ.

"फ़रिशतों और रूह (जिब्रील) का रब निहायत पाक, इन्तहाई मुक़द्दस है"

3. सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है के मैंने एक रात नबी करीम ﷺ को

---

①صحيح مسلم:1814 ②صحيح مسلم:1091

अपने पास ना पाया तो मैं समझी के शायद आप ﷺ किसी और बीवी के पास गए हैं, मैं ने आप ﷺ को तलाश करने की कोशिश की फिर लौटी तो आप ﷺ रुकू या सज्दे में थे और फ़रमा रहे थे:

سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

"पाक है तू अपने तारुफ़ के साथ, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं"

मैंने कहा मेरे मां बाप आप ﷺ पर क़ुर्बान मैं किस ख़्याल में थी और आप ﷺ किस काम में हैं।

4. सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है के मैं ने नबी करीम ﷺ को देखा जब से सुरत "اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْح" उतरी आप ﷺ जब नमाज़ पढ़ते तो दुआ करते या उस (नमाज़) में फ़रमाते :

سُبْحَانَکَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِکَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ.

"पाक है तू, ऐ मेरे रब! और तेरी ही तारीफ़ है, ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे"

5. सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है वह कहती हैं नबी करीम ﷺ अपने रुकू और सजदे में:

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِکَ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ.

"पाक है तू, ऐ अल्लाह! ऐ मेरे रब! और तेरी ही तारीफ़ है, ऐ अल्लाह मुझे बख़्शदे" फ़रमाया करते थे।

6. सय्यदा आयशा ؓ से रिवायत है वह कहती हैं के रसूल अल्लाह ﷺ रुकू व सुजूद में फ़रमाते थे :

سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ.

"पाक है तू अपनी तारीफ़ के साथ, मैं तुझसे बख़्शिश मांगता हूं और तेरी तरफ़ रुजू करता हूं"

---

①صحيح مسلم:1089 ②صحيح مسلم:1087 ③صحيح البخارى:794

फ़रमाती हैं के मैं ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह ﷺ यह कलिमात क्या हैं, मैं देखती हूं के आपने इन्हें कहना शुरू कर दिया है तो आप ﷺ ने फ़रमाया: " मेरे लिए मेरी उम्मत में एक अलामत मुक़र्रर की गई है के जब मैं उसको देखलूं तो यह कहूं, और वह यह है اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ सुरत के आख़िर तक।"

7. सैय्यदा आईशा ؓ से रिवायत है, वह कहती हैं कि रसुल अल्लाह ﷺ अक्सर यह फ़र्माते थे

سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهِ اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوۡبُ اِلَيۡهِ.

"पाक है अल्लाह अपनी तारीफ़ के साथ, मैं अल्लाह से बख़्शिश मांगता हुं और उसकी तरफ़ रूजू करता हुं",कहती हैं कि फ़िर मैंने अर्ज़ किया कि या रसुल अल्लाह ﷺ मैं देखती हुं के आप कसरत के साथ سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهِ اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوۡبُ اِلَيۡهِ कहते हैं, आप ﷺ ने फ़र्माया मेरे रब ने मूझे ख़बर दी है कि अन्क़रीब मैं अपनी उम्मत में एक अलामत देखूंगा जब मैं इस निशानी को देखूं तो मैं سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهِ اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوۡبُ اِلَيۡهِ की कसरत करूं तो तहक़ीक मैंने उस (अलामत) को देख लिया है। (वह निशानी यह है)

وَرَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِىۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ o यानी फ़ताह मक्का اَفۡوَاجًاo فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًاo[2]

8. सैयदना औफ़ बिन मालिक अशजई ؓ से रिवायत है के वह कहते हैं के मैंने एक रात रसुल अल्लाह ﷺ के साथ क़याम किया, आप ﷺ ने क़याम में सुरत अल बक़रह की तिलावत फ़रमाई, आप ﷺ जिस किसी आयते रहमत गुज़रते तो बहां रुकते और दूआ करते और जब भी किसी

---

① صحيح مسلم:1086 ② صحيح مسلم:1088

आयते अज़ाब से गुज़रते तो वहां रुकते और पनाह मांगते, कहते हैं कि फ़िर आप ﷺ ने रूकु किया इस क़दर लम्बा जितना के आप ﷺ का क़याम था, आप ﷺ अपने रूकु में यह कहते थे :

سُبْحَانَ ذِی الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ.

"पाक है वह ज़ात जो ग़ल्बा व क़ुव्वत, बादशाहत, बड़ाई और अज़्मत वाली है", फिर आप ﷺ ने सज्दा किया, इस क़दर लम्बा जितना के आप ﷺ का क़याम था, और आप ﷺ अपने सज्दे में भी वही दूआ पढ़ते रहे, फिर खड़े हूए और आले इमरान की क़िरात फ़रमाई फिर एक सुरत पढ़ी और फिर एक और सुरत पढ़ी ।

9. सयदना अली ؓबिन अबू तालिब से रिवायत है कि रसुल अल्लाह ﷺ जब नमाज़ के लिए ख़डे होते तो पढ़ते: وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضَ और जब रूकु करते तो पढ़ते :

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ،وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ،خَشَعَ لَكَ سَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَمُخِّیْ وَعَظْمِیْ وَعَصَبِیْ.

" ऐ अल्लाह ! मैंने तेरे लिए रूकु किया और मैं तूझ पर ईमान लाया और मैंने तेरे सामने सरे तसलीम ख़म किया, मेरी समाअत, बसारत, दिमाग़, हड्डीयां और मेरे आसाब तेरे सामने आजिज़ी ज़हिर करते हैं ।"

10.सैयदना जाबिर बिन अबदूल्लाह ؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ जब रूकु करते तो यूँ कहते :

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ

---

① سنن أبی داؤد:873 ② صحيح مسلم:1812

وَعَلَيْکَ تَوَكَّلْتُ اَنْتَ رَبِّیْ خَشَعَ سَمْعِیْ وَبَصَرِیْ
وَدَمِیْ وَلَحْمِیْ وَعَظْمِیْ وَعَصَبِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ.

" ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिये रुकु किया और मैं तुझ पर ही ईमान लाया, मैंने तेरे सामने सर तसलीम ख़म किया और मैंने तुझ पर ही भरोसा किया, तू ही मेरा रब है, मेरे कान, मेरी आंखें, मेरा ख़ून, मेरा गोश्त, मेरी हड्डियां और मेरे पठ्ठे अल्लाह के सामने आजज़ी ज़ाहिर करते हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है "

11. सय्यदना अली ؓ बिन अबू तालिब से रिवायत है के नबी करीम ﷺ जब रुकु करते तो युं कहते:

اَللّٰهُمَّ لَکَ رَکَعْتُ،وَبِکَ آمَنْتُ وَلَکَ اَسْلَمْتُ،اَنْتَ
رَبِّیْ،خَشَعَ سَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَمُخِّیْ وَعَظْمِیْ وَعَصَبِیْ
وَمَا اسْتَقَلَّتْ بِهِ قَدَمِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ.

" ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिए रुकु किया और मैं तुझ पर ईमान लाया और मैं तेरा फ़रमाबरदार हुआ, तू ही मेरा रब है, मेरे कान, और मेरी आंखें, और मेरा दिमाग़ और मेरी हड्डियां और मेरे पठ्ठे तेरे सामने झुके हुए हैं और मेरे क़दम भी अल्लाह रब्बुल आलमीन की ख़ातिर उठते हैं "

---

① سنن النسائی:1052 ② مسند احمد، ج:2،960

क़ौमा की दुआएँ
(रुकु से उठते हुए)

1. सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमरؓ से रिवायत है, मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को देखा के जब आप ﷺ नमाज़ के लिए खड़े हुए तो (तकबीर तहरीमा के वक़्त) आप ﷺ ने दोनों हाथ कंधों तक उठाए और उसी तरह जब आप ﷺ रुकु के लिए तकबीर कहते और जब आप ﷺ अपना सर रुकु से उठाते तो (रफ़ायदैन) करते और (अलबत्ता) सजदा में आप ﷺ यह (रफ़ायदैन) नहीं करते थे, आप ﷺ कहते:

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ.

"अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की"

2. सालिम बिन अब्दुल्लाहؓ अपने वालिद से रिवायत करते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ जब नमाज़ शुरू करते तो अपने दोनों हाथों को कंधों तक उठाते इसी तरह जब रुकु के लिए अल्लाहु अकबर कहते और जब अपना सर रुकु से उठाते तब दोनों हाथ उठाते और (रुकु से सर मुबारक उठाते हुए) कहते :

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ.

" अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की । ऐ हमारे रब! और सब तारीफ़ तेरे ही लिए है। "

और आप ﷺ सुजूद में ऐसा (रफ़ायदैन) नहीं करते थे।

---

①صحيح البخارى:736 ②صحيح البخارى:735

3. सय्यदना रफ़ाआ राफ़े बिन ज़ुराक़ी ؓ से रिवायत है वह कहते हैं, एक दिन हम नबी करीम ﷺ की इक़तदा में नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप ﷺ ने रुकु से सर उठाया तो कहा:

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

"अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की"

एक शख़्स ने पीछे से कहाः

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ.

"ऐ हमारे रब! और तेरे ही लिए सब तारीफ़ है। बहुत ज़्यादा पाकीज़ा और बाबर्कत तारीफ़"

आप ﷺ ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया: "(यह कलिमात) कहने वाला कौन है?" उस शक़्स ने जवाब दिया के मैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने तीस से ज़्यादा फ़रिश्तों को देखा जो एक दूसरे पर सबक़त ले जाना चाहते थे के उन कलिमात को उनमें से पहले कौन लिखता है "।

4. सय्यदना हुज़ैफ़ा ؓ से रिवायत है उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, आप ﷺ कहते थे اَللّٰهُ اَكْبَرُ (तीन मर्तबा) ذُوالْمَلَكُوْتِ وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ फिर आप ﷺ ने सना पढ़ी, फिर सूरह अल बक़रह की क़िरात की। फिर रुकु किया और आप ﷺ का रुकु आप ﷺ के क़याम जैसा था। आप ﷺ रुकु में यह दुआ पढ़ते थे سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ फिर रुकु से सर उठाया। आप ﷺ का यह क़याम पहले क़याम की तरह (लम्बा) था। (इसी क़याम में) आप ﷺ पढ़ते थे:

لِرَبِّيَ الْحَمْدُ.

"मेरे रब के लिए ही तमाम तारीफ़ है"

---

① صحيح البخاری:799 ② سنن أبی داؤد:874

5. सय्यदना इब्ने अबी औफ़ीؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ जब अपनी कमर रुकु से उठाते तो यह पढ़ते:

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ،اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ.

" अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ़ की। ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है जिससे के आसमान भर जाएं,ज़मीन भर जाए और इनके इलावा हर वह चीज़ भर जाए जिसे तू चाहे।"

6. सय्यदना इब्ने अब्बासؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ जब रुकु से सर उठाते तो यह पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ،مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ،اَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ،وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ،وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ.

" ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है जिससे आसमान भर जाएं, और ज़मीन भर जाए और जो कुछ इन दोनों के दरमियन है (भरजाऐं) और इनके इलावा हर वह चीज़ जिसे तू चाहे भर जाए। ऐ तारीफ़ और बुज़ुरगी के लायक़ जिसे तू अता फ़रमाए उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिससे तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं और किसी साहिबे हैसियत को उसकी हैसियत तेरे यहाँ कोई फ़ायदा नहीं दे सकती।"

---

①صحيح مسلم:1067 ②صحيح مسلم:1072

7. सय्यदना अबू सईद ख़ुदरीؓ से रिवायत है, वह कहते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ जब रुकु से सर उठाते तो कहते:

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ،مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ،اَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ اَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَکُلُّنَا لَکَ عَبْدٌ،اَللّٰهُمَّ!لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَیْتَ،وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ،وَلَا یَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ.

“ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है। जिससे के आसमान भर जाएं, ज़मीन भर जाए और इनके इलावा हर वह चीज़ जिसे तू चाहे भर जाए। ऐ तारीफ़ और बुज़ुर्गी के लायक़,(तेरे) बंदे ने जो तारीफ़ की तू इसका ज़्यादा हक़दार है और हम सब तेरे ही बंदे हैं, ऐ अल्लाह! जिसे तू अता करे उसे कोई रोक नहीं सकता और जिससे तू रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता और किसी साहबे हैसियत को उसकी हैसियत तेरे यहाँ कोई फ़ायदा नहीं दे सकती “

8. सय्यदना अब्दुल्लाह बिन औफ़ीؓ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं के आप ﷺ फ़रमाया करते थे:

اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ،مِلْءَ السَّمَاءِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ،اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِیْ بِالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِیْ مِنَ الذُّنُوْبِ وَالْخَطَایَا کَمَا یُنَقَّی الثَّوْبُ الْاَبْیَضُ مِنَ الْوَسَخِ.

① صحیح مسلم:1071

“ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, जिससे के आसमान भर जाएं, ज़मीन भर जाए और इनके इलावा हर वह चीज़ जिसे तू चाहे भर जाए, ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहों और ख़ताओं से ऐसे पाक कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है”

---

①صحيح مسلم:1069

सजदे की दुआएं

1. सय्यदना हुज़ैफ़ाؓ फ़रमाते हैं के मैंने एक रात नबी करीम ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी ... आप ﷺ ने सजदा किया और पढ़ा:

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى.

"पाक है मेरा रब जो सबसे बुलंद है" आपका सजदा आपके क़याम के बराबर लम्बा था।

2. सय्यदना उक़्बा बिन आमिरؓ से रिवायत है के ... रसूल अल्लाह ﷺ जब सजदा करते तो तीन बार कहते

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى وَبِحَمْدِهِ.

"मेरा बुलंद व बरतर रब पाक है और उसी की तारीफ़ है"

3. सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है के एक रात मैंने रसूल अल्लाह ﷺ अपने सोने की जगह ना पाया तो मैं आप ﷺ को तलाश करने लग गई को मुझे यह ख़्याल हुआ के आप ﷺ अपनी किसी लौंडी के पास तशरीफ़ ले गये होंगे के मेरा हाथ आप ﷺ को लगा तो आप ﷺ उस वक़्त सजदा में थे और फ़रमा रहे थे:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ مَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ.

"ऐ अल्लाह! मेरे वह गुनाह माफ़ कर दे जो मैंने छुप कर किये और जो मैंने एलानिया किये"

4. सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ अपने रुकु और सजदा में फ़रमाते:

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوْحِ.

"फ़रिश्तों और रूह (जिबरील) का रब निहायत पाक,इन्तहाई मुक़द्दस है"

---

①صحيح مسلم:1814 ②سنن أبي داؤد:870 ③سنن النسائي:1125 ④صحيح مسلم:1091

5. सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है वह कहती हैं के मैंने एक रात नबी करीम ﷺ को अपने पास ना पाया तो मैं समझी के शायद आप ﷺ किसी और बीवी के पास गये हैं और मैंने आप ﷺ को ढूंढा फिर लौटी तो आप ﷺ रुकु या सजदे में थे और फ़रमा रहे थे:

سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ،لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

"पाक है तू अपनी तारीफ़ के साथ, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं "

मैंने कहा मेरे माँ बाप आप ﷺ पर क़ुर्बान मैं किस ख़्याल में थी और आप ﷺ किस काम में थे ।

6. सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है, वह कहती हैं मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को देखा जब से सूरह اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ नाज़िल हुई तो आप ﷺ जब नमाज़ पढ़ते तो उसमें फ़रमाते:

سُبْحَانَکَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِکَ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ.

"पाक है तू ऐ मेरे रब! तेरी ही तारीफ़ है, ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे"

7. सय्यदा आयशा ؓने फ़रमाया के नबी करीम ﷺ अपने रुकु और सुजूद में

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِکَ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ.

"पाक है तू ऐ अल्लाह! हमारे रब! तेरी ही तारीफ़ है, ऐ अल्लाह! मुझे बक़्शदे" पढ़ा करते थे ।

---

① صحيح مسلم:1089 ② صحيح مسلم:1087 ③ صحيح البخارى:794

8. सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है वह कहती हैं, रसूल अल्लाह ﷺ वफ़ात से पहले अक्सर फ़रमाया करते:

سُبْحَانَکَ وَبِحَمْدِکَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ.

"पाक है तू अपनी तारीफ़ के साथ, तुझ से बख़्शिश मांगता हूँ और तेरी तरफ़ रुजु करता हूँ" कहती हैं के मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाहﷺ यह कलिमात क्या है? मैं देखती हूँ के आप ने इन्हें कहना शुरू कर दिया है! तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे लिए मेरी उम्मत में एक अलामत मुक़र्रर की गई है के जब मैं उसको देख लूँ तो यह कहूँ, (और वह है) اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ सूरह के आख़िर तक"

9. सय्यदना औफ़ बिन मालिक अशजईؓ से रिवायत है वह कहते हैं के मैंने एक रात रसूल अल्लाह ﷺ के साथ क़याम किया, आप ﷺ ने क़याम में सूरह बक़रा की तिलावत फ़रमाई, आप ﷺ जिस किसी आयते रहमत से गुज़रते तो वहां रुकते और सवाल करते और जिस किसी आयते अज़ाब से गुज़रते तो वहां रुकते और पनाह मांगते, कहते हैं के फिर आप ﷺ ने इस क़दर लम्बा रुकु किया जितना के आप ﷺ का क़याम था। आप ﷺ रुकु में यह दुआ पढ़ते थे:

سُبْحَانَ ذِی الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَکُوْتِ وَالْکِبْرِیَاءِ وَالْعَظَمَةِ.

"पाक है वह ज़ात जो ग़ल्बा व क़ूव्वत, बादशाहत, बड़ाई और अज़मत वाली " फिर आप ﷺ ने इस क़दर लम्बा सजदा किया जितना के आप ﷺ का क़याम था और आप ﷺ सजदे में भी वही (दुआ) फ़रमाते रहे फिर खड़े हुए और आले इमरान की तिलावत फ़रमाई फिर एक सूरत पढ़ी ।

---

①صحيح مسلم:1086 ②سنن أبی داؤد:873

10. सय्यदना अबू हुरैराؓ से रिवायत है रसूल अल्लाह ﷺ अपने सजदों में यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَاَوَّلَهُ وَاٰخِرَهُ وَعَلَانِيَتَهُ وَسِرَّهُ.

"ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे छोटे और बड़े, पहले और पिछले, ज़ाहिर और पोशीदा सारे गुनाह बख़्श दे"

11. सय्यदा आयशाؓ से रिवायत है, वह कहती हैं के एक रात मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को बिस्तर पर ना पाया तो मैंने आप ﷺ को तलाश किया आप ﷺ अपनी नमाज़गाह में थे और मेरा हाथ आप ﷺ के पांव के तलवे पर जा पड़ा इस हाल में के आप ﷺ के पांव गड़े हुए थे और आप ﷺ फ़रमा रहे थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ،وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ،وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ،لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ،اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ.

" ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामंदी की पनाह में आता हूँ और तेरी पकड़ से तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ और तुझसे (डर कर) तेरी ही पनाह में आता हूँ, मैं पूरी तरह तेरी तारीफ़ करने की ताक़त नहीं रखता, तू वैसा ही है जैसा के तूने ख़ुद अपनी सना बयान की है "

---

① صحيح مسلم:1084 ② صحيح مسلم:1090

12. सय्यदना अलीؓ बिन अबी तालिब बयान करते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो अल्लाहु अकबर कहते... और जब सजदा करते तो यूँ कहते:

اَللّٰهُمَّ لَکَ سَجَدْتُّ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَلَکَ اَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ فَاَحْسَنَ صُوْرَتَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ وَتَبَارَکَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِیْنَ.

" ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए ही सजदा किया, मैं तुझही पर ईमान लाया, मैं तेरा फ़रमाबरदार हूँ, मेरा चहरा उस ज़ात के लिए सजदारेज़ हुआ जिसने उसे पैदा किया और उसकी सूरत बनाई, फिर उसे बहतरीन सूरत बख़्शी और उसके कान और आंखें बनाए और बहुत बा बर्कत है अल्लाह जो पैदा करने वालों में सबसे अच्छा है "

13. सय्यदना अलीؓ बिन अबी तालिब से रिवायत है के ... जब आप ﷺ सजदा करते तो यह फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ لَکَ سَجَدْتُّ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَلَکَ اَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ تَبَارَکَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِیْنَ.

"ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए ही सजदा किया, मैं तुझ पर ईमान लाया, मैं तेरा फ़रमाबरदार हूँ, मेरा चहरा उस ज़ात के लिए सजदारेज़ हुआ जिसने उसे पैदा किया और उसकी सूरत बनाई, उसके कान और आंखें बनाए। बहुत बा बर्कत है अल्लाह जो पैदा करने वालों में सबसे अच्छा है "

---

① سنن أبی داؤد:760 ② صحیح مسلم:1812

14. सय्यदना इब्ने अब्बास ؓ फ़रमाते हैं के मैंने अपनी ख़ाला मैमूना ؓ के घर एक रात गुज़ारी तो मैं रसूल अल्लाह ﷺ की नमाज़ की कैफ़ियत को देखने के लिए जागता रहा, कहते हैं के आप ﷺ खड़े हुए और पेशाब किया फिर आप ﷺ ने अपने चहरे और हाथों को धोया फिर आप ﷺ सो गये। फिर आप ﷺ खड़े हो कर मशकीज़े की तरफ़ गये और आप ﷺ ने उसका मुंह खोला और उसका पानी एक बड़े प्याले में डाला फिर उससे अपने हाथ पर पानी बहाया। फिर आप ने वुज़ू फ़रमाया और बहुत अच्छे तरीक़े से वुज़ू फ़रमाया, दोनों दफा वुज़ू में (एक,एक या तीन,तीन के बजाय दो,दो मर्तबा धोया), फिर आप ﷺ खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे तो मैं भी आया और आप ﷺ के बाएँ पहलू की तरफ़ खड़ा हो गया आप ﷺ ने मुझे पकड़ कर अपनी दाएँ तरफ़ खड़ा कर दिया। रसूल अल्लाह ﷺ ने तेरह रकातें नमाज़ मुकम्मल पढ़ीं फिर आप ﷺ सो गये यहां तक के आप ﷺ ख़र्राटे लेने लगे और हम पहचानते थे के आप ﷺ जब सोते हैं खर्राटे लेते हैं फिर आप ﷺ नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए और अपनी नमाज़ों या अपने सजदों में दुआ मांगते हुए फ़रमाते थे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّمِيْنِيْ نُوْرًا وَّعَنْ شِمَالِيْ نُوْرًا وَّاَمَامِيْ نُوْرًا وَّخَلْفِيْ نُوْرًا وَّفَوْقِيْ نُوْرًا وَّتَحْتِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّيْ نُوْرًا.

“ ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर डाल दे और मेरी समाअत में नूर और मेरी बसारत में नूर और मेरे दाएँ नूर और मेरे बाएँ नूर और मेरे आगे नूर और मेरे पीछे नूर और मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर और मेरे लिए नूर बना दे”

---

① صحيح مسلم:1794

जलसे की दुआ

(दो सजदों के दरमियान बैठना)

1. सय्यदना हुज़ैफ़ाؓ से रिवायत है उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा... आप ﷺ ने सजदे से सर उठाया और सजदों के दरमियान बैठे इतनी देर जितनी के सजदे में लगाई और उस दौरान में कहते थे:

رَبِّ اغْفِرْلِیْ،رَبِّ اغْفِرْلِیْ.

"ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे, ऐ मेरे रब! मुझे बख़्श दे ।"

नोट: तवील(लम्बे) जलसे के लिए इस दुआ को एक से ज़्यादा मर्तबा अपने गुनाहों की मग़फ़िरत की तलब की ग़र्ज़ से पढ़ें ।

3. सय्यदना इब्ने अब्बासؓ से रिवायत है के नबी करीम ﷺ दो सज्दों के दरमियान कहा करते:

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَاھْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ.ضعیف

"ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे, मुझ पर रहम फ़रमा, मेरे हालात दुरुस्त फ़रमा, मुझे हिदायत अता फ़रमा और मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा"

3. जबकि एक दूसरी रिवायत जो के सय्यदना इब्ने अब्बास ؓसे ही रिवायत है के नबी करीम ﷺ दो सजदों के दरमियान कहा करते थे:

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَاھْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ.ضعیف

"ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे, मुझपर रहम फ़रमा, मुझे आफ़ियत में रख, मुझे हिदायत अता फ़रमा और मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा "

---

①سنن أبی داؤد:874 ②سنن التّرمذی:284 ③سنن أبی داؤد:850

तशह्हुद

(दूसरी रकत में दूसरे सजदे के बाद बैठना)

1.सय्यदना इब्ने मसूद ؓ ने बयान किया के रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे तशह्हुद सिखाया,उस वक़्त मेरा हाथ आप ﷺ की हथेलियों के दरमियान में था (इस तरह सिखाया) जिस तरह आप क़ुरआन की कोई सूरत सिखाया करते थे ।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ،اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ،اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ.

“तमाम क़ौली, फ़ैली और माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं, सलाम हो आप पर ऐ नबी! और अल्लाह की रहमतें और उसकी बर्कतें हों, सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके रसूल हैं ”

आप ﷺ उस वक़्त हमारे साथ थे । जब आप ﷺ की वफ़ात हो गई तो हम (मुख़ातिब के सीग़े के बजाय इस तरह) पढ़ने लगे اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

“नबी करीम ﷺ पर सलाम हो”

---

①صحيح البخارى:6265

दरूद शरीफ़

1. अब्दुर रहमान बिन अबी लैला ؓ ने बयान किया के एक मर्तबा सय्यदना काब बिन उजरा ؓ से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा क्यों ना तुम्हें (हदीस का) एक तोहफ़ा पहुंचा दूँ जो मैंने नबी करीम ﷺ से सुना था। मैंने अर्ज़ किया क्यों नहीं! मुझे यह तोहफ़ा ज़रूर इनायत फ़रमाइये। उन्होंने बयान किया के हम ने रसूल अल्लाह ﷺ से पूछा था या रसूल अल्लाह! ﷺ हम आपके (यानी) अहले बैत पर किस तरह दरूद भेजा करें? पस बेशक अल्लाह ने हमें सिखा दिया है के हम कैसे आप पर सलाम भेजें। आप ﷺ ने फ़रमाया के युं कहा करो:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ
عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ،
اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ
عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ.

“ऐ अल्लाह! मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर उसी तरह रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमाई बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला बहुत बुज़ुर्गी वाला है,ऐ अल्लाह! मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर उसी तरह बर्कत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने इब्राहीम علیہ السلام और आले इब्राहीम पर बर्कत नाज़िल फरमाई बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला बहुत बुज़ुर्गी वाला है “

2. सय्यदना अबू हुमैद सादी ؓ से रिवायत है के सहाबा किराम ؓ ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह ﷺ हम आप पर किस तरह दरूद भेजा करें? तो रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया के तुम (यूं) कहा करो:

---

① صحیح البخاری:3370

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْـرَاهِيْـمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

"ऐ अल्लाह! मुहम्मद ﷺ और आप की अज़वाज और आपकी औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने आले इब्राहीम علیہ السلام पर रहमत फ़रमाई और मुहम्मद ﷺ और आपकी अज़वाज और आपकी औलाद पर बर्कत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर बर्कत नाज़िल फ़रमाई बेशक तू बहुत तारीफ़ वाला बहुत बुज़ुर्गी वाला है"

---

①صحيح البخارى:3369

तशह्हुद वा दरूद के बाद की दुआएं

1. सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ ؓसे रिवायत है के उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया के आप मुझे कोई ऐसी दुआ सिखा दीजिये जिसे मैं नमाज़ में पढ़ा करूं। आप ﷺ ने फ़रमाया: यह दुआ पढ़ा करो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ،اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ.

"ऐ अल्लाह! बिला शुबा मैंने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया और तेरे सिवा गुनाहों को कोई भी नहीं बख़्श सकता पस तू मुझे अपनी ख़ास बख़्शिश से माफ़ फ़रमा दे और मुझ पर रहम फ़रमा। बेशक तू बहुत बख़्शने वाला इन्तिहाई महरबान है"।

2. सय्यदना अली ؓबिन अबी तालिब रसूल अल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं के... आप ﷺ (नमाज़ के) आख़िर में तशह्हुद और सलाम के दरमियान फ़रमाते:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

"ऐ अल्लाह! तू मेरे अगले पिछले,पोशीदा और ज़ाहिर (तमाम) गुनाह माफ़ फ़रमा और मैंने जो ज्यादतियां कीं और (वह गुनाह) जिन को तू मुझसे ज़्यादा जानता है (माफ़ फ़रमा) तू ही आगे ले जाने वाला है और पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं "।

---

①صحيح البخارى:834 ②صحيح مسلم:1812

3. सय्यदा आयशा ؓ ख़बर देती हैं के रसूल अल्लाह ﷺ नमाज़ में यह दुआ करते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ،وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ الْمَمَاتِ،اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ.

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह में आता हूँ अज़ाबे क़ब्र से,तेरी पनाह में आता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ितने से और तेरी पनाह में आता हूँ ज़िन्दगी के फ़ितने से और मौत के फ़ितने से, ऐ अल्लाह! यक़ीनन मैं तेरी पनाह में आता हूँ गुनाहों और क़र्ज़ से "। किसी ने आप ﷺ से अर्ज़ की के आप तो क़र्ज़ से बहुत ज़्यादा पनाह मांगते हैं, इस पर आप ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक जब आदमी मक़रूज़ हो जाता है तो झूठ बोलता है और वादा ख़िलाफ़ हो जाता है "

4. सय्यदना अबू हुरैरा ؓसे रिवायत है, वह कहते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई एक तशह्हुद पढ़े तो वह अल्लाह से चार चीज़ों की पनाह मांगे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ.

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं जहन्नम के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से, ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से और मसीह दज्जाल के फ़ितने के शर से तेरी पनाह में आता हूँ"

---

① صحيح البخاری:832 ② صحيح مسلم:1324

5.उमर बिन मैमून अलऔदी से रिवायत है, वह कहते हैं के सय्यदना साद ؓ अपने लड़कों को यह कलिमात सिखाते थे जिस तरीक़े से उस्ताद बच्चों को सिखाता है और यह बयान करते थे के रसूल अल्लाह ﷺ उनको नमाज़ के आख़िर में (सलाम से पहले) पनाह मांगते थे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبُخْلِ،وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُبْنِ،
وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اُرَدَّ اِلٰی اَرْذَلِ الْعُمُرِ،وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ
الدُّنْیَا،وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ.

" ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुख़्ल से, तेरी पनाह चाहता हूँ बुज़िदली से, तेरी पनाह चाहता हूँ इससे के मैं बेकार उमर की तरफ़ लौटाया जाऊँ, तेरी पनाह चाहता हूँ दुनिया की आज़माइश से और तेरी पनाह चाहता हुँ क़ब्र के अज़ाब से"

6.अता बिन साइब अपने वालिद से रिवायत करते हैं के सय्यदना अम्मार बिन यासिर ؓ ने हमें नमाज़ पढ़ाई तो मुख़्तसर नमाज़ पढ़ाई बाज़ (लोगों) ने कहा के आपने नमाज़ हल्की या मुख़्तसर पढ़ी है तो उन्होंने कहा के इसके बावजूद मैंने इसमें कई वह दुआएं पढ़ली हैं जिनको मैंने रसूल अल्लाह ﷺ से सुना है। जिस वक़्त वह खड़े हुए तो एक शक़्स उनके पीछे आया। वह मेरे वालिद थे लेकिन उन्होंने अपने आप को छिपाने की कोशिश की और वह दुआ उनसे दरयाफ़्त की फिर वापस आए और लोगों को बतलाई वह दुआ यह थी:[1]

اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِکَ الْغَیْبَ وَقُدْرَتِکَ عَلَی الْخَلْقِ اَحْیِنِیْ مَا
عَلِمْتَ الْحَیَاةَ خَیْرًا لِّیْ وَتَوَفَّنِیْ اِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَیْرًا لِّیْ
اَللّٰهُمَّ وَاَسْاَلُکَ خَشْیَتَکَ فِی الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ،

① سنن النسائی:5449

وَاَسْـاَلُکَ کَلِمَةَ الْحَقِّ فِی الرِّضَاءِ وَالْغَضَبِ،وَاَسْاَلُکَ الْـقَـصْـدَ فِـی الْـفَـقْـرِ وَالْـغِـنٰـی وَاَسْـاَلُکَ نَعِیْمًا لَّا یَنْفَدُ وَاَسْـاَلُکَ قُـرَّةَ عَیْـنٍ لَّا تَـنْقَطِعُ وَاَسْـاَلُکَ الرِّضَاءَ بَعْدَ الْقَضَاءِ وَ اَسْاَلُکَ بَرْدَالْعَیْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَ اَسْاَلُکَ لَذَّةَ الـنَّـظَرِ اِلٰی وَجْهِکَ،وَالشَّوْقَ اِلٰی لِقَائِکَ فِیْ غَیْرِضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَّلَا فِتْـنَةٍ مُّـضِلَّةٍ،اَللّٰهُمَّ زَیِّنَّا بِزِیْنَةِ الْاِیْمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُّهْتَدِیْنَ.

“ऐ अल्लाह! अपने ग़ैब जानने और मख़्लूक़ पर क़ुदरत रखने के बाइस मुझे उस वक़्त तक ज़िन्दा रख जब तक तेरे इल्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी मेरे लिए बहतर है और उस वक़्त मुझे फ़ौत करलेना जब तेरे इल्म के मुताबिक़ मौत मेरे लिए बहतर हो। ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझसे ग़ैब और हाज़िर (हर हाल) में तेरी ख़शियत का सवाल करता हूँ और ख़ुशी और ग़ुस्से में कलिमा हक़ कहने का सवाल करता हूँ और मैं तुझसे फ़क़्रो ग़िना (दोनों हालतों) में मयाना रवी का सवाल करता हूँ। और ऐसी नेमत का सवाल करता हूँ जो कभी ख़त्म ना हो और आंखों की ऐसी ठंडक का सवाल करता हूँ जो कभी मुनक़ता ना हो और तुझसे तेरे फ़ैसलों पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ और मौत के बाद की ज़िन्दगी में ठंडक का सवाल करता हूँ और मैं सवाल करता हूँ तेरे चहरे के दीदार की लज़्ज़त का और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का जो बग़ैर किसी तक्लीफ़दह मुसीबत गुमराहकुन फ़ितने के हासिल हो। ऐ अल्लाह! हमें ईमान की ज़ीनत से मुज़य्यन फ़रमा और हमें हिदायत याफ़ता लोगों का राहनुमा बना दे ”

---

① سنن النسائی:1306

7. सय्यदना महजन बिन अदरा ؓसे रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ ले गये, एक आदमी नमाज़ के तशह्हुद पढ़ने में मशग़ूल था के उस दौरान वह शख़्स कहने लगा:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ یَااَللّٰهُ بِاَنَّکَ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ
الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّهُ کُفُوًا اَحَدٌ اَنْ تَغْفِرَلِیْ
ذُنُوْبِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ.

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह! इस वज्ह से के तू यकता है, ऐसा बेनियाज़ के जिसकी ना कोई औलाद है और ना वह किसी की औलाद और ना कोई उसका हम पल्ला है, यह के तू मेरे गुनाहों को बख़्श दे बेशक तू बहुत बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है”। आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसको बख़्श दिया गया ”

8. सय्यदना महजन बिन अदरा ؓने बयान किया के रसूल अल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए,आप ﷺ ने एक शख़्स को देखा जिसने अपनी नमाज़ मुकम्मल कर ली थी और वह तशह्हुद पढ़ रहा था और कह रहा था:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ یَااَللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ
یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّهُ کُفُوًا اَحَدٌ اَنْ تَغْفِرَلِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّکَ اَنْتَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ.

“ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ ऐ अल्लाह! तू यकता है, बेनियाज़ है जिसकी ना कोई औलाद है और ना वह किसी की औलाद और ना कोई उसका हमसर है, यह के तू मेरे गुनाहों को बख़्शदे बेशक तू बहुत बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है “ तो आप ﷺ ने तीन बार फ़रमाया: तहक़ीक़ इसको बख़्श दिया गया, तहक़ीक़ इसको बख़्श दिया गया”

---

① سنن النسائی:1302 ② سنن أبی داؤد:985

9. सय्यदना अनस बिन मालिक ؓसे रिवायत है, वह कहते हैं के मैं रसूल अल्लाह ﷺ के पास बैठा हुआ था और एक आदमी वहाँ पर खड़ा हुआ नमाज़ पढ़ रहा था जब रुकु और सजदे और तशह्हुद से फ़ारिग़ हुआ तो वह अपनी दुआएं कहने लगा:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ بِاَنَّ لَکَ الْحَمْدَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ
الْمَنَّانُ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ
یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ.

" ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ इस वज्ह से के तमाम तारीफ़ तेरे ही लिये हैं। तेरे सिवा कोई इलाह नहीं, बहुत ज़्यादा एहसान करने वाला आसमानों और ज़मीन को नये सिरे से पैदा करने वाला,ऐ जलाल व इज़्ज़त वाले! ऐ हमेशा ज़िन्दा और क़ायम रहने वाले! बेशक मैं तुझसे ही सवाल करता हूँ"

फिर नबी करीम ﷺ ने सहाबा कराम ؓसे फ़रमाया:

"क्या तुम जानते हो इसने किन लफ़्ज़ों से दुआ मांगी "? उन्होंने कहा के अल्लाह और उसका रसूल ﷺ ख़ूब जानते हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है इसने अल्लाह से उसके इस्मे आज़म से दुआ की के जब इस (इस्मे आज़म) के साथ अल्लाह को पूकारा जाए तो वह ज़रूर जवाब देता है और जब इसके साथ मांगा जाए तो वह ज़रूर अता फ़रमाता है"

---

① سنن النسائی:1301

सलाम फैरने के बाद की दुआएं

नमाज़ के बाद के अज़कार

1. सय्यदना इब्ने अब्बास ؓ से रिवायत है वह कहते हैं, मैं नबी करीम ﷺ की नमाज़ ख़तम होने को. اَللّٰهُ اَكْبَرُ "अल्लाह सब से बड़ा है", की वज्ह से समझ जाता था।

2. सय्यदना सौबान ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ जब अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ होते थे तो तीन मर्तबा اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ. "मैं अल्लाह से बख़्शिश तलब करता हूं", पढ़ते और कहते:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

"ऐ अल्लाह ! तू सलामती वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती है, ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले! तेरी ज़ात बड़ी बाबर्कत है "

3. सय्यदना मोआज़ बिन जबल ؓ से रिवायत है वह कहते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने मेरा हाथ पकड़ा फिर फ़रमाया :"मैं तुझसे मुहब्बत रखता हूं ऐ मोआज़!" मैंने कहा: मैं भी आप ﷺ से मुहब्बत रखता हूं या रसूल अल्लाह ﷺ! तो रसूल अल्लाह ने फ़रमाया : "हर नमाज़ के आख़िर में यह कहना मत छोड़ना:

رَبِّ اَعِنِّىْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.

"ऐ मेरे रब अपना ज़िकर और अपना शुकर और अपनी बहतरीन इबादत करने में मेरी मदद फ़रमा "

4. सय्यदना अबू अमामा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़े उसको मौत के सिवा कोई चीज़ जन्नत में दाख़ले से नहीं रोक सकती"

---

① صحیح البخاری:842 ② صحیح مسلم:1334 ③ سنن النسائی:1304

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ
لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ
عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا
یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ
الْعَظِیْمُ ○

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं मगर सिर्फ़ वही, वह हमेशा से ज़िन्दा और क़ायम रहने वाला है, उसे ना ऊंघ आती है और ना नींद, उसी के लिए है जो आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने शफ़ाअत कर सके, वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है और वह उसके इल्म में से किसी चीज़ का इहाता नहीं कर सकते सिवाए इसके जो वह चाहे,उसकी कुर्सी आसमानों और ज़मीन तक वसीअ है और उन दोनों की हिफ़ाज़त उसे नहीं थकाती और वह बहुत बुलन्द, बहुत अज़्मत वाला है ”

5. सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “...क्या मैं तुम्हें ऐसी बात ना बताऊं के उस पर अमल करके तुम उन लोगों तक पहुंच जाओगे जो तुम पर सबक़त ले गए हैं और तुमहारे बाद आने वाला तुम्हें नहीं पा सकेगा, और तुम जिन लोगों में हो उन में से बहतर हो जाओगे सिवाए उस शख़्स के जो इस जैसा अमल करेगा, तुम हर नमाज़ के बाद कहो:

سُبْحَانَ اللّٰه (33 मर्तबा) اَلْحَمْدُ لِلّٰه (33 मर्तबा) اَللّٰهُ اَكْبَرُ (33 मर्तबा)

”अल्लाह पाक है, तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, अल्लाह ही सबसे बड़ा है“

① عمل اليوم والليلة للنسائی:100 ② صحيح البخاری:843

6. स्ययदना बरा ؓ से रिवायत है के जब हम रसूल अल्लाह ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ते थे तो हमें पसंद था के हम आप ﷺ के दाहिनी तरफ़ हों ताकि आप ﷺ हमारी तरफ़ मुंह करके बैठें, कहते हैं के मैंने सुना आप ﷺ फ़रमा रहे थे :

رَبِّ قِنِیْ عَذَابَکَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَکَ.

"ऐ मेरे रब मुझे अपने अज़ाब से बचाना जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा "

7. सय्यदना अली बिन अबु तालिब ؓ बयान करते हैं के ..... रसूल अल्लाह ﷺ जब नमाज़ से सलाम फैरते तो यह दुआ पड़ते :

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

"ऐ अल्लाह मेरे लिए (वह गुनाह) बख़्शदे जो मैंने पहले किए और जो बादमें किए , जो छुप कर किए और जो ज़ाहिरन किए और जो मैंने ज़्यादती की और जिन को तू मुझ से ज़्यादा जानता है, तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है, तेरे सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं "

8. सय्यदना साद ؓ अपने बच्चों को यह कलिमात इस तरह सिखाते थे जैसे मुअल्लिम बच्चों को लिखना सिखाता है और फ़रमाते थे के बेशक रसूल अल्लाह ﷺ नमाज़ के बाद इन कलिमात के ज़रिए अल्लाह की पनाह मांगते थे।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اُرَدَّ اِلٰی اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ

① صحیح مسلم:1642 ② مسند احمد، ج:2،729

عَذَابِ الْقَبْرِ.

"ऐ अल्लाह बेशक मैं तेरी पनाह मैं आता हूं इससे के मैं बेकार उम्र की तरफ़ लौटाया जाऊं, तेरी पनाह में आता हूं दुनिया की आज़माइश से और तेरी पनाह में आता हूं क़बर के अज़ाब से "

9. सय्यदना मुग़ीराह बिन शोबा ؓ ने सय्यदना माविया बिन अबी सुफ़ियान ؓ को लिखा के रसूल अल्लाह ﷺ हर नमाज़ के बाद जब सलाम फैरते तो यह कहा करते थे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْکَ لَهُ،لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ،اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا
مُعْطِىَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,तमाम तारीफ़ उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है,ऐ अल्लाह जिसे तू अता फ़रमाए उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिससे तू रोकले उसे कोई देने वाला नहीं और किसी साहिबे हैसियत को उसकी हैसियत तेरे हां कोई फ़ायदा नहीं दे सकती "

10. सय्यदना इब्ने ज़ुबैर ؓ से रिवायत है के .....रसूल अल्लाह ﷺ हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करते थे:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْکَ لَهُ،لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ،لَا اِلٰـهَ

①صحيح البخارى:2822 ②صحيح البخارى:6330

اِلَّا اللّٰـهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है, (गुनाह सेबचने की) ताक़त और (नेकी करने की) क़ुव्वत सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ है,अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और हम सिवाए उसके किसी और की इबादत नहीं करते, तमाम नेमतें और तमाम फ़ज़ल उसी के लिए है और बहतरीन तारीफ़ उसी के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, हम उसी के लिए दीन को ख़ालिस करने वाले हैं अगरचे काफ़िरों को नापसंद हो "

11:सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "जिस आदमी ने हर नमाज़ के बाद

سُبْحَانَ اللّٰهَ (33 मर्तबा) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ(33 मर्तबा) اَللّٰهُ اَكْبَرُ(33 मर्तबा)

(अल्लाह पाक है, तमाम तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है,(अल्लाह सब से बड़ा है) कहा तो यह 99 कलिमात हो गए और 100 का अदद पूरा करने के लिए :

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसी के लिए है औक तमाम तारीफ़ उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला है", कहा

① صحيح مسلم:1343

तो उसके सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे चाहे वह समुन्दर की झाग के बराबर हों।"

12. वर्राद (रावी) मुग़ीरा बिन शोबा ؓ से रिवायत करते हैं के नबी करीम ﷺ नमाज़ के बाद फ़रमाया करते :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْکَ لَهُ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ،
وَهُوَ حَیٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ،
اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ
ذَاالْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं! वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है, वह ज़िन्दा है! उसे मौत नहीं आएगी! उसी के हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है। ऐ अल्लाह! जिसे तू अता फ़रमाए उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिससे तू रोकले उसे कोई देने वाला नहीं और किसी साहिबे हैसियत को उसकी हैसियत तेरे हां कोई फ़ायदा नहीं दे सकती"।

13. सय्यदना मुग़ीरा बिन शोबा ؓ के कातिब वर्राद से रिवायत है के मुआविया ؓ ने मुग़ीरा ؓ को ख़त लिखा के कोई हदीस मुझे लिख कर दो जो तुमने आप ﷺ से सुनी है, चुनाचे मुग़ीरा ؓ ने उन्हें लिखा के:

बेशक मैंने आप ﷺ से सुना, आप ﷺ नमाज़ से फ़राग़त के बाद तीन मर्तबा फ़रमातेः

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْـدَهُ لَا شَرِيْکَ لَـهُ،لَـهُ الْمُلْکُ وَلَـهُ
الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

① صحيح مسلم:1352 ② المعجم الكبير للطّبرانی، ج:20،926

“अल्लाह के सिवा कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला है।”

14. सय्यदना उक़्बा बिन आमिर ؓ से रिवायत है उन्हों ने कहा के रसूल अल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म दिया था के मैं हर नमाज़ के बाद मुअव्विज़ात पढ़ा करूं :

मुअव्विज़ात : सूरत अल इख़्लास, सूरत अल फ़लक़ और सूरत अल नास (एक एक मर्तबा)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۝ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

“कह दीजिए! के अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ है, ना उसने किसी को जना और ना ही वह किसी से पैदा हुआ और ना ही कोई उसका हमसर है।”

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۝ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الۡعُقَدِ ۝ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

“कह दीजिए! के मैं सुब्ह के रब की पनाह चाहता हूं, हर उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की है और अन्धेरी रात की तारीकी के शर से जब वह छा जाए और गिरहों में फूंकने वालियों के शर से जब वह हसद करे ”

---

① صحيح البخارى:6473 ② سنن أبى داؤد:1523

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ o مَلِكِ النَّاسِ o اِلٰهِ النَّاسِ o مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ الۡخَنَّاسِ o الَّذِىۡ يُوَسۡوِسُ فِىۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ o مِنَ الۡجِنَّةِ وَالنَّاسِ o

"कह दीजिए! के मैं लोगों के रब की पनाह चाहता हूं, लोगों के माबूद की, वस्वसा डालने वाले, बार बार पलट कर आने वाले के शर से, वह जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है, जिन्नों और इंसानों में से ।"

15. सय्यदना इब्ने उमर ؓ से रिवायत है, वह कहते हैं के जो शख़्स हर नमाज़ के बाद और अपने बिस्तर पर सोने से पहले तीन मर्तबा कहे:

اَللّٰهُ اَكۡبَرُ كَبِيۡرًا، عَدَدَ الشَّفۡعِ وَالۡوِتۡرِ، وَكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الطَّيِّبَاتِ الۡمُبَارَكَاتِ (तीन मर्तबा)

"اللہ اکبر کبیرا जुफ़्त और ताक़(सम और विशम) की गिन्ती के बराबर और अल्लाह के इन कलिमात के बराबर जो मुकम्मल, पाकीज़ा और बाबर्कत हैं"

اور لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، عَدَدَ الشَّفۡعِ وَالۡوِتۡرِ، وَكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الطَّيِّبَاتِ الۡمُبَارَكَاتِ (तीन मर्तबा) और

"لا الہ الا اللہ जुफ़्त और ताक़(सम और विशम) की गिन्ती के बराबर और अल्लाह के इन कलिमात के बराबर जो मुकम्मल,पाकीज़ा और बाबर्कत हैं"

भी इसी तरह कहे, उसके लिए यह कलिमात क़बर में नूर, पुल पर नूर और पुल सिरात पर नूर बन जाएंगे, यहां तक यह कलिमात उसको जन्नत में दाखिल करदेंगे या वह ख़ुद जन्नत में दाख़िल हो जाएगा ।

---

① المصنّف لابن ابی شیبة، ج:10، 29744

नमाज़े फ़जर की सुन्नतों के बाद की दुआ

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ؓ ने बयान किया के मैं सय्यदा मैमूना ؓ के यहां एक रात सोया तो नबी करीम ﷺ उठे और आप ने अपनी हाजत पूरी करने के बाद अपना चहरा धोया, फिर दोनों हाथ धोए और सो गए फिर आप ﷺ खड़े हुए, मश्कीज़े के पास गए और आपने उसका मूंह खोला फिर दर्मियाना वुज़ू किया मुबालग़ा किए बग़ैर दर्मियाना लेकिन कामिल वुज़ू किया, अलबत्ता पानी हर जगह पहूंचा दिया, फिर आप ﷺ ने नमाज़ पढ़ी, मैं भी खड़ा हुआ और आपके पीछे ही रहा क्योंकि मैं इसे पसंद नहीं करता था के आप ﷺ यह समझें के मैं आप का इन्तिज़ार कर रहा था, मैंने भी वुज़ू कर लिया था, आप ﷺ जब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे तो मैं भी आप ﷺ की बाईं तरफ़ खड़ा हो गया, आप ﷺ ने मेरा कान पकड़ कर दाईं तरफ़ कर दिया, आपﷺ ने तेरह रकतें नमाज़ मुकम्मल पढ़ीं, फिर आप ﷺ लेटे और सो गए यहां तक के आप की सांस में आवाज़ पैदा होने लगी, आप ﷺ जब सोते थे तो आप ﷺ की सांस में आवाज़ पैदा होने लगती थी, इसके बाद बिलाल ؓ ने आप ﷺ को नमाज़ की इत्तिला दी चुनाचे आप ﷺ ने(नया) वुज़ू किए बग़ैर नमाज़ पढ़ी, आप ﷺ अपनी दुआ में यह कहते थे:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّمِيْنِيْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّسَارِيْ نُوْرًا وَّفَوْقِيْ نُوْرًا وَّ تَحْتِيْ نُوْرًا وَّاَمَامِيْ نُوْرًا وَّخَلْفِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّيْ نُوْرًا.

“ऐ अल्लाह! मेरे दिल में मेरा नूर डालदे और मेरी बसारत में नूर और मेरी समाअत में नूर और मेरे दाएं तरफ़ नूर और मेरे बाएं तरफ़ नूर और मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर और मेरे आगे नूर और मेरे पीछे नूर और मेरे लिए नूर बनादे”

---

①صحيح البخارى:6316

नमाज़े फ़जर के बाद की दुआएं

1. सय्यदना अबू हुरैरा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : “जो शख़्स सुब्ह की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा سُبۡحَانَ اللّٰهِ और सौ मर्तबा لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰه कहे तो उसके सब गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे अगरचे वह समुन्दर के झाग के बराबर हों।”

2. रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने फ़जर की नमाज़ के बाद दस मर्तबा यह कलिमा पढ़ा :

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحُـدَهُ لَا شَرِيُکَ لَـهُ،لَـهُ الْمُلْکُ وَلَـهُ

الْحَمُدُ وَهُوَ عَلٰى کُلِّ شَیُءٍ قَدِيُرٌ.

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।”

तो अल्लाह अज्जवजल उसके लिए दस नेकीयां लिखेगा, दस बुराईयां माफ़ कर देगा, उसके दस दर्जे बुलन्द करेगा और इन कलिमात का सवाब इसमाईल(अ) की औलाद में से दो ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा, अगर शाम को भी उसी तरह पढ़ेगा तो यही अजर मिलेगा, (नीज़) यह कलिमात सुब्ह तक उसके लिए शैतान से हिफ़ाज़त साबित होंगे।”

3. सय्यदना अबू उमामा ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “जो कोई सुब्ह की नमाज़ के बाद अपने पाऊं मोड़ने से पहले (यानी तशहुद की हालत में बैठे बैठे) सौ मर्तबा कहे :

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيُکَ لَهُ،لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمُدُ

يُحۡيِیُ وَيُمِيۡتُ بِيَدِهِ الْخَيۡرُ وَهُوَ عَلٰى کُلِّ شَیۡءٍ قَدِيۡرٌ.

“अल्लाह के सिवा माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं,

---

① سنن النسائی:1355 ② السلسة الصحيحة،ج:113,1

तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है, वह ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है, उसी के हाथ में तमाम भलाई है और वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला है।"

उस दिन ज़मीन वालों में अमल के ऐतबार से सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल है सिवाए इसके जो इस जैसा कहे या इस से ज़्यादा कहे।"

नमाज़े फ़जर और नमाज़े असर के बाद की दुआ

1. सय्यदना अबु ज़र ؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "जो कोई फ़जर की नमाज़ के बाद बात करने से पहले (तशहुद की हालत में बैठ कर) अपनी टांग को दोहरा किए हुए दस मर्तबा कहे :

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْـدَهُ لَا شَرِيْکَ لَـهُ،لَـهُ الْمُلْکُ وَلَـهُ الْحَمْدُ يُحْيِیْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसीके लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है, वह ज़िन्दगी देता है और मौत देता है और वह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है।"

तो अल्लाह उसके लिए दस नेकीयां लिख लेता है, उस से दस बुराईयां मिटा देता है, उसके लिए दस दर्जात बुलन्द करता है और वह अपने इस सारे दिन में हर मकरूह चीज़ से महफ़ूज़ रहेगा और शैतान से बचाया जाएगा,उस दिन शिर्क के इलावा कोई ऐसा गुनाह नहीं होगा जिस पर उसकी पकड़ हो (यानी वह गुनाह माफ़ कर दिया जाएगा)।

एक रिवायत में है : "और जो कोई असर की नमाज़ के बाद इनको कहे तो उसको रात को भी इसी जैसा सवाब दिया जाएगा"

---

① صحيح الترغيب و الترهيب،ج:476,1 ② صحيح الترغيب و الترهيب،ج:472,1

नमाज़ फ़ज्र और नमाज़ मग़रिब के बाद की दुआ

1. सय्यदना मोआज़ बिन जबलؓ से रिवायत है वह कहते हैं, रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो कोई सुब्ह की नमाज़ से सलाम फैरने के बाद दस मर्तबा कहे:

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْکَ لَـهُ لَـهُ الْمُلْکُ وَ لَـهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं! वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है,उसीके हाथ में तमाम भलाई है और वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला है।"

तो इसके ज़रिए सात चीज़ें दी जाती हैं : अल्लाह उसके लिए इनके ज़रिए दस नेकियां लिख देता है, इसके ज़रिए उससे दस बुराइयां मिटा देता है, उसके लिए इनके ज़रिए दस दरजात बुलंद करता है,और उसको दस गर्दनें आज़ाद करने के बराबर सवाब होता है और उसके लिए शैतान से हिफ़ाज़त होती है,और उसके लिए मकरूह से बचाव होता है और उस रोज़ शिर्क के इलावा किसी गुनाह पर उसकी पकड़ नहीं होगी और जिसने इसको मग़रिब के बाद कहा उसे भी रात में ऐसा ही सवाब दिया जाता है।

नमाज़े मग़रिब के बाद मांगी जाने वाली दुआ

1. सय्यदना अमारा बिन शबीब सबाईؓ से रिवायत है के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स मग़रिब के बाद दस मर्तबा यह पढ़ेगा:

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْکَ لَـهُ،لَـهُ الْمُلْکُ وَلَـهُ

---

① صحيح الترغيب والترهيب، ح:475,1

الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ.

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं, तमाम बादशाहत उसी के लिए है और तमाम तारीफ़ उसी के लिए है, वह ज़िन्दगी देता है और मौत देता है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है"।

तो अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त के लिए असलाह बरदार फ़रिश्ते भेज देगा जो सुब्ह तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त करेंगे, उसके लिए दस वाजिब करने वाली नेकियाँ लिख देगा उससे दस हलाक करने वाली बुराइयाँ मिटा देगा और उसे दस मोमिन ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा।"

---

① سنن الترمذی:3534

वितर की दुआएं

1. आख़री रकअत में रुकु से पहले या रुकु के बाद दर्ज ज़ेल दुआए क़ुनूत पढ़ी जाएगी: वितर में पढ़ी जाने वाली एक दुआ " اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ " है इसे क़ुनूत वितर कहा जाता है।

इसका तरीक़ा यह है के सूरह फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरत पढ़ने के बाद हाथ उठाए बग़ैर क़याम ही की हालत में उसे पढ़ा जाए और तकबीर कह कर रुकुअ किया जाए।

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ،وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ،وَتَوَلَّنِیْ فِیْمَنْ تَوَلَّیْتَ،وَبَارِکْ لِیْ فِیْمَا اَعْطَیْتَ،وَقِنِیْ شَرَّ مَا قَضَیْتَ، فَاِنَّکَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْکَ،وَاِنَّهُ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ،وَلَا یَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ تَبَارَکْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ.

" ऐ अल्लाह! जिन्हें तूने हिदायत दी है मुझे भी उनके साथ हिदायत दे और जिन्हें तूने आफ़ियत दी है मुझे भी उनके साथ आफ़ियत दे और जिनकी तूने सरपरस्ती फ़रमाई है उनमें मेरा भी सरपरस्त बनजा और जो कुछ तूने मुझे अता फ़रमाया है उसमें मेरे लिए बर्कत फ़रमा और जो तूने फ़ैसले फ़रमाए हैं उनके शर से मुझे महफ़ुज़ रख, बेशक तूही फ़ैसले करता है और तेरे फ़ैसले के ख़िलाफ़ कोई फ़ैसला नहीं कर सकता और बेशक जिसका तू दोस्त हो जाए वह कभी ज़लील नहीं हो सकता और जिस से तू दुश्मनी करे वह कभी इज़्ज़त नहीं पा सकता तू बहुत बाबर्कत है ऐ हमारे रब और तू बुलंद शान वाला है"।

---

①سنن ابن ماجه:1182,1184 ②سنن أبی داؤد:1425

2. एक दुआ "اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُکَ" है इसे क़ुनूत नाज़िला कहा जाता है।

अगर क़ुनूत नाज़िला पढ़नी है तो वह रुकु के बाद हाथ उठा कर पढ़ी जाए

अब्दुर रहमानؒ से रिवायत है वह कहते हैं, इब्ने मसऊद ؓ हमें सिखाया करते के हम क़ुनूत यानी वितर में (यह) कहा करें:

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُکَ وَنَسْتَغْفِرُکَ وَنُثْنِیْ عَلَیْکَ وَلَا نَکْفُرُکَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُکُ مَنْ یَّفْجُرُکَ،اَللّٰھُمَّ اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَلَکَ نُصَلِّیْ وَنَسْجُدُ وَاِلَیْکَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَکَ وَنَخْشٰی عَذَابَکَ اِنَّ عَذَابَکَ بِالْکُفَّارِ مُلْحِقٌ.

"ऐ अल्लाह! बेशक हम तुझसे मदद मांगते हैं और हम तुझसे बख़्शिश तलब करते हैं और हम तेरी तारीफ़ बयान करते हैं और तेरी नाशुकरी नहीं करते और हम उससे अलैहदा हो जाएंगे और उसको छोड़ देंगे जो तेरी नाफ़रमानी करेगा, ऐ अल्लाह! हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिए हम नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ़ हम कोशिश करते और दौड़ते हैं तेरी ही रहमत की हम उम्मीद रखते हैं और हम तेरे अज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अज़ाब कुफ़्फ़ार को पाने वाला है"।

3. वितर के आख़िर में यह दुआ पढ़ी जाएगी:

---

① المصنف ابن أبی شیبة،ج:10,30204

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِرِضَاکَ مِنۡ سَخَطِکَ وَبِمُعَافَاتِکَ مِنۡ عُقُوۡبَتِکَ وَاَعُوۡذُبِکَ مِنۡکَ لَا اُحۡصِیۡ ثَنَاءً عَلَیۡکَ اَنۡتَ کَمَا اَثۡنَیۡتَ عَلٰی نَفۡسِکَ.

" ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामंदी की और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह लेता हूँ और मैं तुझसे (डर कर) तेरी ही पनाह में आता हूँ। मैं तेरी तारीफ़ करने की ताक़त नहीं रखता, तू वैसा ही है जैसा के तूने ख़ुद अपनी सना बयान की है"।

वितर के बाद की दुआ

4. सय्यदना उबई बिन काबؓ कहते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ (अपनी नमाज़ को) तीन रकअत के साथ वितर करते थे (वितर की) पहली रकअत में سَبِّحِ اسۡمَ رَبِّکَ الۡاَعۡلٰی, दूसरी रकअत में قُلۡ یٰۤاَیُّهَا الۡکٰفِرُوۡنَ और तीसरी रकअत में قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तिलावत फ़रमाते और रुकुअ के क़ब्ल (दुआए) क़ुनूत पढ़ते, फिर आप ﷺ नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद तीन बार यह फ़रमाते

سُبۡحَانَ الۡمَلِکِ الۡقُدُّوۡسِ.

"पाक है बादशाह निहायत पाक।" और आख़री बार (क़ुद्दूस को कहने में) ख़ूब खींचते।

---

①المستدرك على الصحيحين للحاكم، ج:1، 1191 ②سنن النّسائی:1700

नमाज़े जनाज़ा की दुआएं

सय्यदना अबू हुरैराؓ बयान करते हैं के मैंने रसूल अल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना है: " जब तुम किसी मैय्यत का जनाज़ा पढ़ो तो उसके लिए इख़लास से दुआ किया करो"।

1.اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ اَمَتِكَ،اِحْتَاجَ اِلٰى رَحْمَتِكَ وَاَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهِ وَاِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ.

" ऐ अल्लाह! यह तेरा बंदा और तेरी बंदी का बेटा, तेरी रहमत का मोहताज है और तू इसे आज़ाब देने से बेनियाज़ है। अगर वह नेक था तो इसके नेक आमाल में इज़ाफ़ा फ़रमा और अगर बुराइयों पर था तो इससे दरगुज़र फ़रमा ।"

2.اَللّٰهُمَّ اِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِيْ ذِمَّتِكَ وَحَبْلِ جِوَارِكَ فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَاَنْتَ اَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَقِّ اَللّٰهُمَّ فَاغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ.

" ऐ अल्लाह! फ़ुलां बिन फ़ुलां तेरे ज़िम्मे (किफ़ालत) में है और तेरी हमसाएगी में आ गया है, सो तू इसे क़ब्र की आज़माइश और आग के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमादे तू (अपने) वादे को पूरा करने वाला और हक़ वाला है ऐ अल्लाह! पस इसे बख़्श दे और इसपर रहम फ़रमा बिला शुबा तू बहुत बख़्शने वाला है निहायत रहम करने वाला है ।"

---

① سنن أبی داؤد:3199 ② المستدرك للحاكم، ج:1،1368 ③ سنن أبی داؤد:3202

3.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا،اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاَحْيِهِ عَلَى الْاِيْمَانِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْاِسْلَامِ،اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهُ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ.

" ऐ अल्लाह! हमारे ज़िन्दों और हमारे मुर्दों, हमारे छोटों और हमारे बड़ों, हमारे मर्दों और हमारी औरतों, हमारे मौजूद लोगों को और जो मौजूद नहीं (उन सब को) बख़्शदे, ऐ अल्लाह! हममें से जिसे तू ज़िन्दा रखे तो उसे ईमान पर ज़िन्दा रख और हममें से जिसे तू मौत दे उसे इस्लाम पर मौत दे, ऐ अल्लाह! हमें इस (मरने वाले) के अज्र से महरूम ना रख और इसके बाद हमें गुमराह भी ना कर देना "

4.اَللّٰهُمَّ!اغْفِرْلَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَاَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِّنْ دَارِهِ وَاَهْلًا خَيْرًا مِّنْ اَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِّنْ زَوْجِهِ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ.

---

①سنن أبی داؤد:3201

" ऐ अल्लाह! इसको बख़्शदे, इस पर रहम फ़रमा, इसे आफ़ियत अता फ़रमा, इसे माफ़ फ़रमा, इसकी बहतरीन मेहमानी फ़रमा, इसकी क़ब्र को कुशादा फ़रमा और इसे पानी, बर्फ़ और ओलों से धोदे और इसे गुनाहों से इस तरह साफ़ करदे जैसा के सफ़ेद कपड़े को मैल कुचैल से साफ़ किया जाता है और इसे इसके घर से बहतर घर अता फ़रमा और घरवालों सेबहतर घरवाले और इसकी बीवी से बहतर बीवी अता फ़रमा, इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा, इसे अज़ाबे क़ब्र और आग के अज़ाब से बचा "

5.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهُ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِى الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِى عَقِبِهِ فِى الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْلَنَا وَلَهُ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ! وَافْسَحْ لَهُ فِىْ قَبْرِهِ وَنَوِّرْ لَهُ فِيْهِ.

" ऐ अल्लाह! इसे माफ़ फ़रमा और हिदायत याफ़ता लोगों में इसका दर्जा बुलंद फ़रमा और इसके पीछे रह जाने वालों में तू ही इसका ख़लीफ़ा बन जा या रब्बुल आलमीन! हमें और इसको बख़्शदे, इसकी क़ब्र में इसके लिए कुशादगी फ़रमा और उसमें इसके लिए रौशनी फ़रमा "

मैय्यत बच्चे के लिए दुआएं

1.اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ.

" ऐ अल्लाह! इसे क़ब्र के अज़ाब से बचा।"

2.اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا سَلَفًا وَفَرَطًا وَاَجْرًا.

" ऐ अल्लाह! इस (बच्चे) को हमारे लिए हमसे पहले आगे जाकर इंतज़ाम करने वाला बनादे और अज्र का बाइस बनादे। "

---

①صحيح مسلم:2232 ②صحيح مسلم:2130 ③المؤطا لامام ما لك،كتاب الجنائز:18
④صحيح البخارى،كتاب الجنائز:باب:65

नमाजे तहज्जुद के लिए दुआए इस्तफ़्ताह

1. सय्यदना हुज़ैफ़ाؓ से रिवायत है उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो आप ﷺ कहते थे:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ (तीन मर्तबा)

ذُوالْمَلَكُوْتِ وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ .

"अल्लाह सबसे बड़ा है, कामिल मिलकियत वाला, ग़ल्बे वाला, बड़ाई और अज़मत वाला" फिर आप ﷺ ने सना पढ़ी फिर सूरह बक़रा की क़िरअत की...

2. सय्यदना अबू सईद ख़ुदरीؓ बयान करते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ जब रात को क़याम फ़रमाते तो तकबीर के बाद युं कहते:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى

جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ.(एक मर्तबा)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (तीन मर्तबा) اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا (तीन मर्तबा)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ هَمْزِهِ

وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ.

"ऐ अल्लाह! तू पाक है अपनी तारीफ़ के साथ, तेरा नाम बहुत ही बाबर्कत है, तेरी बुज़ुर्गी बुलंद व बरतर है, तेरे इलावा कोई इलाह नहीं अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं अल्लाह सबसे बड़ा है बहुत बड़ा, मैं बहुत सुनने बहुत जानने वाले अल्लाह की पनाह लेता हूँ शैतान मरदूद की उक्साहट, उसकी फूंक और उसके वसवसे से"। उसके बाद आप ﷺ क़िराअत फ़रमाते।

---

① سنن أبي داؤد:874 ② سنن أبي داؤد:775

3. सय्यदना अबू सलमा बिन अब्दुर रहमान बिन औफ़ؓ से रिवायत है कहते हैं के मैंने उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आयशाؓ से पूछा नबी करीम ﷺ रात को नमाज़ पढ़ते तो किन अलफ़ाज़ से नमाज़ शुरू करते? उन्होंने फ़रमाया: "आप ﷺ जब रात को क़याम करते तो इन अलफ़ाज़ से नमाज़ का आग़ाज़ करते":

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ، اِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِكَ اِنَّكَ تَهْدِيْ مَنْ تَشَاءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

"ऐ अल्लाह! जिबरील, मिकाईल,इस्राफ़ील के रब! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले! तूही अपने बंदों के दरमियान इस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिसमें वह इख़्तिलाफ़ करते रहे थे, तू अपने इज़्न से हक़ की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा उन बातों के मामले में जिनमें इख़्तिलाफ़ किया गया है, बेशक जिसे तू चाहता है उसे सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाता है"

4. रबीआ जुर्शीؓ से रिवायत है वह कहते हैं के मैंने आयशाؓ से पूछा रसूल अल्लाह ﷺ जब रात को क़याम (नमाज़) के लिए खड़े होते तो क्या कहा करते? और किन अलफ़ाज़ से शिरू करते? कहने लगीं: आप ﷺ दस मर्तबा तकबीर (اللہ اکبر) तकबीर कहते, दस मर्तबा तस्बीह कहते, (سبحان اللہ) तसबीह दस मर्तबा तहलील (لا الہ الا اللہ) तहलील कहते, दस मर्तबा बख़्शिश तलब करते और दस मर्तबा फ़रमाते:

---

①صحيح مسلم:1811

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ.

" ऐ अल्लाह! मुझे बख़्शदे और मुझे हिदायत दे और मुझे रिज़्क अता फ़रमा।"

और दस मर्तबा फ़रमाते: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الضِّیْقِ یَوْمَ الْحِسَابِ.

"ऐ अल्लाह! मैं हिसाब के दिन की तंगी से तेरी पनाह मांगता हूँ"।

5. सय्यदना इब्ने अब्बास ؓ कहते हैं के नबी करीम ﷺ जब रात में तहज्जुद के लिए खड़े होते तो यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ لَکَ مُلْکُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ،وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِکُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ،وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُکَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُکَ حَقٌّ، وَقَوْلُکَ حَقٌّ،وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ،وَالنَّبِیُّوْنَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ،وَالسَّاعَةُ حَقٌّ.اَللّٰهُمَّ لَکَ اَسْلَمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَاِلَیْکَ اَنَبْتُ وَبِکَ خَاصَمْتُ وَاِلَیْکَ حَاکَمْتُ فَاغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

① مسند أحمد، ج:42، 25102

“ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है, तू आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनमें है उनको वही क़ायम रखने वाला है, और सारी तारीफ़ तेरे ही लिए है तेरे ही लिए बादशाहत है आसमानों और ज़मीन की और जो कूछ उनमें है, सारी तारीफ़ तेरे ही लिए है तू आसमानों और जमीन का नूर है, हर क़िस्म की तारीफ़ तेरे ही लिए है तू आसमानों और ज़मीन का बादशाह है, तमाम तारीफ़ तेरे ही लिए है तू ही हक़ है, तेरा वादा सच्चा है, तेरी मुलाक़ात बरहक़ है, तेरी बात सच्ची है, जन्नत हक़ है, आग हक़ है, सारे अन्बिया सच्चे हैं, मुहम्मद ﷺ सच्चे हैं और क़यामत बरहक़ है, ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही सामने झुका और मैं तुझ पर ईमान लाया और मैंने तुझही पर भरोसा किया और मैंने तेरी ही तरफ़ रुजू की और मैं तेरी ही मदद से (मुख़ालफ़ीन के साथ) झगड़ता हूं और मैं तुझही से फ़ैसला चाहता हूं, तू मेरे अगले पिछले, ज़ाहिर पोशीदा गुनाहों को माफ़ फ़रमादे, तूही आगे करने वाला और पीछे रखने वाला है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ”

---

① صحيح البخارى:1120

नमाज़े इसतेख़ारा की दुआएं

1.दो रकआत इसतेख़ारा की नियत से पढ़ने के बाद दर्जे ज़ेल दुआ मांगी जाए :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ بِقُدْرَتِکَ،
وَاَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ،فَاِنَّکَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ،
وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ،وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ،اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ
اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ،
فَاقْدُرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ،ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْهِ،وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ
اَنَّ ھٰذَاالْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ،
فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدُرْلِیَ الْخَیْرَحَیْثُ کَانَ
ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ.

“ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझसे तेरे इल्म के सबब ख़ैर तलब करता हूं और तेरी क़ुदरत के सबब तुझसे ताक़त मांगता हूं और तेरे फ़ज़ले अज़ीम का तलबगार हूं के बेशक तू ही क़ुदरत रखता है और मैं क़ुदरत नहीं रखता, तू जानता है और मैं नहीं जानता और तू तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब जान्ने वाला है, ऐ अल्लाह तेरे इल्म के मुताबिक़ अगर यह काम (जिस काम के लिए इसतेख़ारा कर रहा हूं) मेरे दीन, मेरे मआश और मेरे काम के अन्जाम के ऐतबार से मेरे लिए बहतर है तो उसे मेरा मुक़द्दर करदे और उसे मेरे लिए आसान करदे फिर उसमें मेरे लिए बर्कत पैदा करदे और तेरे इल्म के मुताबिक़ अगर यह काम मेरे दीन, मेरे मआश और मेरे काम के अन्जाम के ऐतबार से बुरा है तो उसे मुझसे दूर करदे और मुझे

भी उससे दूर करदे और जहां भी ख़ैर हो उसे मेरा मुक़द्दर बनादे फिर मुझे उस पर राज़ी करदे ”

- दुआ करते हुए जब هٰذَاالْاَمْرَ के अलफ़ाज़ पर आएं तो अपनी हाजत का नाम ले लिया जाए

---

① صحیح البخاری:1162 ② صحیح البخاری:6382

नमाज़े इसतसक़ा की दुआएं

• हाथों की पुश्त आसमान की तरफ़ करके दर्जे ज़ेल दूआएं मांगी जाएं :

1.اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا.

"ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बर्सा, ऐ अल्लाह! हम पर बारिश बर्सा "

2.اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا غَيْثًا مُّغِيْثًا مَّرِيْئًا مَّرِيْعًا نَّافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ عَاجِلًا غَيْرَ اٰجِلٍ.

"ऐ अल्लाह ! हम पर बारिश बर्सा ऐसी बारिश जो हमारी तिशनगी(प्यास) मिटादे, हल्की फुवार बनकर ग़ल्ला उगाने वाली, नफ़ा देने वाली ना के नुक़्सान पहुंचाने वाली हो,जल्द आने वाली ना के देर से आने वाली हो"

3.اَللّٰهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهَائِمَكَ وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَاَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ.

"ऐ अल्लाह! अपने बन्दों और जानवरों को पानी पिला, अपनी रहमत को फैला और अपने मुर्दा शहरों को जिन्दा करदे "

4.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ،الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ،مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ،اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْغَنِيُّ وَنَحْنُ الْفُقَرَاءُ،اَنْزِلْ عَلَيْنَا الْغَيْثَ وَاجْعَلْ مَا اَنْزَلْتَ لَنَا قُوَّةً وَبَلَاغًا اِلٰى حِيْنٍ.

---

①صحيح البخارى:1013 ②سنن أبى داؤد:1169 ③سنن أبى داؤد:1176

सजदा तिलावत कि दुआएं

• सय्यदना इब्ने अब्बासؓ से रिवायत है वह कहते हैं के नबी करीम ﷺ के पास एक शख़्स आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! रात जब मैं सोया हुआ था तो मैंने ख़ुद को ख़्वाब में देखा (गोया) मैं एक दरख़्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूं, मैंने सज्दा किया और दरख़्त ने भी मेरे सज्दे के साथ ही सज्दा किया, मैंने सुना वह पढ़ रहा था. اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ ... عَبْدِكَ دَاوٗدَ. सय्यदना इब्ने अब्बासؓ कहते हैं के नबी करीम ﷺ ने आयते सज्दा पढ़ी फिर सज्दा किया, इब्ने अब्बासؓ कहते हैं मैंने आप ﷺ को सज्दे में यह दुआ कहते हुए सुना जो इस शख़्स ने दरख़्त की (दूआ) बताई थी

1.اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ اَجْرًا،وَضَعْ عَنِّيْ بِهَا وِزْرًا،
وَاجْعَلْهَا لِيْ عِنْدَكَ ذُخْرًا،وَتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ
عَبْدِكَ دَاوٗدَ.

"ऐ अल्लाह ! मेरे लिए इस (सज्दे) के एवज़ (बदले) अपने पास अजर लिखले और इसकी बदौलत मुझसे (मेरे गुनाहों का) बोझ उतारदे और इसको मेरे लिए अपने पास ज़ख़ीरा बनादे और इसको मुझसे क़ुबूल करले जैसे तूने अपने बन्दे दाऊद علیه السلام से क़ुबूल किया "

• सजदए तिलावत में दरजे ज़ेल दुआ पढ़ी जाएगी :

2.سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ
وَقُوَّتِهِ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ.

---

① سنن الترمذی:579 ② سنن الترمذی:579

“तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सब जहानों का रब है, बेहद महरबान निहायत रहम वाला है, क़यामत के दिन का बादशाह है, अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं, वह जो चहता है करता है, ऐ अल्लाह! तूही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माअबूद नहीं तू ग़नी और हम मोहताज हैं, हम पर बारिश बर्सा और जो तू बर्साए उसे एक मुद्दत तक हमारे लिए क़ुव्वत और मक़ासिद के हुसूल का ज़रिया बना”

---

① سنن أبی داؤد:1173

" मेरे चहरे ने उस ज़ात के लिए सज्दा किया जिसने इसे अपनी ताक़त के ज़रिए इसे पैदा किया, इसकी समाअत और बसारत (के लिए सुराख़) को फाड़ निकाला! अल्लाह बहुत बाबर्कत है जो बहतरीन पैदा करने वाला है "

3.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ بِهَا،اَللّٰهُمَّ حُطَّ عَنِّیْ بِهَا وِزْرًا وَاَحْدِثْ لِیْ بِهَا شُكْرًا وَتَقَبَّلْهَا مِنِّیْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ سَجْدَتَهُ.

" ऐ अल्लाह इसकी वज्ह से मेरे गुनाह माफ़ करदे, ऐ अल्लाह इसके ज़रिए मेरे बोझ दूर करदे और मेरे लिए इसके ज़रिए शुकर (नेमत) पैदा करदे और इसे मुझसे क़ुबूल फ़रमाले जैसा कि तूने अपने बन्दे दाऊद से उनका सजदा क़ुबूल फ़रमाया था ।"

नोट : जो दुआएं नमाज़ के सज्दे में पढ़ी जाती हैं वही दुआएं सज्दाए तिलावत में पढ़ लेना मसनून हैं ।

---

①سنن أبی داؤد:1414،المستدرك علی الصحیحین للحاكم،ج:1،833

②صحیح الترغیب والترهیب،ج:2،1442

المصادرو المراجع

- القرآن

- **صحیح البخاری** ،ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل البخاری الجعفی،الطبعة الثانیة: **1999**،دار السلام للنشر و التّوزیع،الرّیاض.

- **صحیح مسلم**،ابو الحسین مسلم بن الحجاج بن مسلم القشیری النیسا بوری، الطبعة الاولیٰ:**1998**،دار السلام للنشرو التّوزیع،الرّیاض.

- **سنن أبی داؤد**،أبو داؤد سلیمان بن الأشعث بن اسحاق بن شداد بن عمرو الأزدی السّجستانی،الطبعة الاولیٰ:**1999** ،دار السلام للنشرو التّوزیع،الرّیاض.

- **سنن الترمذی**،أبو عیسٰی محمد بن عیسٰی بن سؤرة بن موسٰی بن الضحاك الترمذی، الطبعة الاولی:**1999** ،دار السلام للنشرو التّوزیع،الرّیاض.

- **سنن النّسائی الصغریٰ** ،الحافظ أبی عبدالرحمٰن أحمد بن شعیب بن علی بن سنان النسائی،الطبعة الاولی:**1999**،دار السلام للنشرو التّوزیع،الرّیاض.

- **سنن ابن ماجه**، الحافظ أبی عبداللّٰہ محمد بن یزیدالربعی ابن ماجه القروینی، الطبعة الاولی:**1999**،دار السلام للنشرو التوزیع،الرّیاض.

- **سلسلة الأحادیث الصحیحة** ،أبو عبدالرحمٰن محمد ناصرالدین الألبانی،**1995**، مکتبة المعارف للنشر و التوزیع، الریاض.

- **مسند الامام أحمد بن حنبل**، أبو عبد اللّٰہ أحمد بن حنبل بن هلال بن أسد الشیبانی،الطبعة الثانیة:**1999**،مؤ سسة الرسالة للنّشر و التّوزیع.

- **المعجم الکبیر**،أبو القاسم سلیمان بن أحمد بن أیوب بن مطیر اللخمی الشامی الطبرانی،الطبعة الثانیة:**2002**،مکتبة ابن تیمیة،القاهرة.

- **المستدرك علی الصحیحین** ،أبو عبد اللّٰہ الحاکم محمد بن عبد اللّٰہ بن محمد بن حمدویه بن نُعیم بن الضبی الظهمانی النیسابوری المعروف بابن البیع،الطبعة

الثانية:**2006**،دارالمعرفة بيروت،لبنان.

❁ **السنن الکبریٰ**،أبو عبد الرحمن أحمد بن شعیب بن علی الخراسانی النسائی، الطبعة الاولیٰ:**2001**، مؤسسةالرسالة. بیروت.

❁ **المصنّف**،أبو بکر عبدالرزاق بن همام الصنعانی،الطبعة الثانیة:**1983**،المکتب الاسلامی. بیروت.

❁ **المصنّف**،أبو بکر عبداللّٰه بن محمد بن ابراهیم ابن أبی شیبة،الطبعة الثانیة :**2006**، مکتبة الرشد. ناشرون. الرّیاض.

❁ **صحیح الترغیب و الترهیب** ،محمد ناصرالدین الألبانی ،الطبعة الاولیٰ :**2000**، مکتبة المعارف للنشر و التوزیع،الریاض.

❁ **عمل الیوم واللیلة** ،أبو عبد الرحمن أحمد بن شعیب بن علی الخراسانی النسائی، الطبعة الثالثة:**1406**،مؤسسةالرسالة. بیروت.

❁ **سلسلة تیسیر الفقه الاسلامی**،السلسلة القیمة للشیخ سلیمان بن محمد اللیهیمد، الألوکةالمجلس العلمی.

❁ **مصباح اللغات**، *ابوالفضل مولانا عبدالحفیظ بلیاوی، قدیمی کتب خانہ، کراچی۔*

حيّ على الصلاة

حيّ على الفلاح

978-696-8665-75-3

04010085

AL-HUDA
Publications (Pvt) Ltd.